तृतीय अध्याय

'प्रिय शबनम' : चरित्र-चित्रण

तृतीय अध्याय

'प्रिय शबनम !' : चरित्र - चित्रण --

३.१ उपन्यास में चरित्र का निर्माण -

जिस प्रकार कथावस्तु के मूल में कहानी होती है, उसी प्रकार चरित्र - चित्रण के मूल में मनुष्य होता है। जब हम संसार को तत्वत: देखने का प्रयत्न करते है तब उसे मानव की क्रियाओं एवं विचारों को प्रकट विस्तार के रूप में पाते हैं। उपन्यास मानव के संसार का उपन्यासकार की कल्पना के माध्यम से प्रक्षिप्त रूप है। अत: उपन्यास के संसार में उपन्यास के चरित्रों का प्रमुख स्थान होता है। संसार में तो सभी प्राणी होते हैं, पर उपन्यास में तो प्राय केवल मनुष्य ही होते है। अपवाद रूप में हमें कुछ उपन्यासों में मनुष्येतर प्राणियों का चरित्र भी मिलता है। उपन्यासकार स्वयम् मनुष्य होता है, अत: उसके द्वारा निर्मित चरित्र में जो निकट सम्बन्ध होता है वह कला के और किसी स्वरूप में नहीं होता।

चरित्र - चित्रण में आरम्भिक काल में विशिष्ट दो रूप सामने आते है - विश्लेषणात्मक और नाटकीय ढंग। प्रथम है सीधा विश्लेषणात्मक ढंग और द्वितीय वक्र नाटकीय ढंग। पहले प्रकार में तो उपन्यासकार किसी चरित्र को लेता है और उसका बाहर से चित्रण करता है। वह उसकी वासनाओं, उध्देश्यों, विचारों और भावनाओं को उधार कर देता है उन्हे स्पष्ट करता है, उनपर टीका करता है और तब अधिकारपूर्ण ढंग से अपने निर्णय देता है। दूसरे प्रकार के चरित्र-चित्रण में वह अलग जा खडा होता है और चरित्र को स्वयम अपने भाषणों एवं कृत्यों द्वारा अपने को उधारने देता है। वह चरित्रों के आत्म-चित्रण को अन्य चरित्रों के द्वारा उनके विषय में कहीं गई टिप्पणियों की सहायता से और

अधिक स्पष्ट करता है। उपन्यासों में प्राय: इन दोनों ढंगों का मिश्रण होता है।

चरित्र को हम जीवन से निकालकर पुस्तक में रख सकते हैं। अथवा पुस्तक के पात्रों को हम अपने बीच में पा सकते हैं। इसका नकारात्मक उत्तर नया महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित कर देता है कि क्या हम दिन - प्रतिदिन के जीवन में एक - दूसरे को समझ सकते हैं ? इसका अभिप्राय यह हुआ कि पुस्तकों के चरित्र जीवन से मेल नहीं खाते, केवल उसके समानान्तर चलते हैं।

३:२ उपन्यास में चरित्र - चित्रण का महत्व --

उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण तत्व चरित्र-चित्रण है। कुछ आलोचक चरित्र-चित्रण को अधिक महत्व नहीं देते हैं। इसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि चरित्र - उपन्यासकार की नहीं पाठक की सृष्टि होता है। चरित्र - चित्रण, उपन्यास की समग्रता का एक अंशमात्र होता है,पर यह स्पष्ट है कि यह उसका सबसे महत्वपूर्ण अंश है और उसके अवयवात्मक संघटन के विचार से शीर्षस्थान पर रखा जा सकता है। क्यों कि जहाँ तक पाठक का सम्बन्ध है बिना चरित्र की सहायता से मनुष्य के भाग्य का विधान स्पष्ट ही नहीं किया जा सकता। उपन्यास में जो कुछ भी होता है इन सबका योग्य चरित्र के संघटन में होता है। यह सभी अच्छे उपन्यासकारों के चरित्र के विषय में सच है। आंशिक रूप से वे आवश्य ही पाठक और चरित्र के बीच में मध्यस्थता का काम करते हैं। वह इस कार्य को अपने लिखे हुए प्रत्येक शब्द द्वारा सम्पन्न करता है। क्यों कि उपन्यासकार का लिखा हुआ प्रत्येक शब्द चरित्र विशेष के प्रति दृष्टिकोण को ही स्पष्ट नहीं करता वरन् पूरी परिस्थिति को भी चित्रित करता है।

इस प्रकार अच्छे लेखकों के चरित्र एक साथ मिलकर उनके उपन्यासों को लेखकों के जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण का दृष्टान्त रूप बना देते हैं। इन्ही चरित्रों के माध्यम से वे अपना जीवन - दर्शन भी उपस्थित करते हैं।

देवेश जी का उपन्यास ' प्रिय शबनम ' के प्रमुख पात्र है मंगल और शबनम।

अन्य महत्वपूर्ण पात्रों में आते हैं - शम्मूदा, लाजो तथा मंगल की माँ । इसके अलावा गौण पात्र हैं -- शबनम के पिता, मंगल के पिता, बच्चन, आस्था,अमर घई,मूलचंद ,लाजो की माँ आदि ।

३:३ ' प्रिय शबनम ' उपन्यास के पात्र :

३:३:१ मंगल :

३:३:१:१ नायक मंगल :

' प्रिय शबनम ' उपन्यास का नायक मंगल पहाडी प्रदेश के कोटद्वार नामक छोटे कस्बे में रहनेवाला युवक है । उसकी माता कोटद्वार में रहती है । पिता ट्रक - ड्राइवर हैं और शराब,जुआ,वेश्या और गालियाँ आदि ही उनकी दुनिया है । उसकी माँ पति के आतंक से त्रस्त होकर घर चलाने के लिए घर के सामने चौबारेपर ही पकौडे और उबले हुए सिंघाडे बेचनेकी दुकान खोलती है । अत्यन्त प्रतिकूल आर्थिक स्थिति में वह मंगल को पढ़ाती है । मंगल से वह अच्छे व्यवहार की अपेक्षा करती है । ताँकि वह अपने बाप जैसा न बने । मंगल की बहन सुक्की उर्फ सुषमा जवान होनेपर लाजो के भाई के साथ भाग जाती है और उससे विवाह रच लेती है । लाजो मंगल की बचपन की दोस्त है ।

संघर्ष एवं अभावों के बीच पला - बढ़ा युवक मंगल ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए.प्रथम श्रेणी में प्राप्त की है । मंगल कोटद्वार के अंग्रेजी स्कूल मास्टर पि.मार्टिन की मदद से बम्बई के सेंट थॉमस कॉलेज में व्याख्याता के पदपर नियुक्ति पाता है । यही उसका परिचय चतुर्थ वर्ष की एक छात्रा शबनम से होता है । मंगल का परिचय शबनम से प्रगाढ होता जाता है । वे दोनों एक - दूसरे के व्यक्तित्व एवं विचारों से अवगत होते हुए शहर के अनेक नामी रेस्तराँ में उठते - बैठते ,खाते - पिते हुए ऐसे बिन्दुपर आ पहुँचते हैं, जहाँ विवाह - बन्धन मे बँधना अनिवार्य बन जाता है ।

वेस्ट झोन के कमाण्डर कॉमरेड शम्मूदा से वैचारिक सम्पर्क तथा लाजो का अपनी मृत बेटी को लेकर बम्बई आना ऐसी घटनाएँ हैं जो को उस सैलाब से

बाहर निकलने नहीं देती । शम्मूदा के विचारों से प्रभावित होकर मंगल कोलीवाडा में पार्टी का काम शुरु करता है । वह लाजो को एक कमरे में रख देता है । दिन-ब-दिन वह लाजो के दैहिक आकर्षण में बँधता जाता है। मंगल की माँ इन दोनों के रिश्ते को स्वीकार नहीं पाती । अत: दोनों में हरदिन गाली-गलौज,मारपीट तथा झगडे होते हैं । मंगल इन सबसे तंग आता है । शबनम के पति बांगला देश के युध्द में लापता होते है । लाजो अपने पूर्व पति के पास चली जाती है । मंगल अपनी बेटी 'आस्था' के साथ जीवन व्यतीत कर रहा है । शबनम से मुलाकात होने पर उसे कोलीवाडा में पार्टी के काम में शरीक होने का निमत्रंण देता है ।

इस प्रकार उपन्यास की प्रारंभ से लेकर अन्त तक की सभी घटनाओं के साथ मंगल का संबंध रहा है । इतना ही नहीं उपन्यास का ताना-बाना उसके इर्द-गिर्द ही बुना गया है । इस दृष्टि से मंगल इस उपन्यास का प्रमुख पुरूष पात्र एवं नायक है ।

३:३:१:२ अध्यापक मंगल --

मंगल बम्बई के कैथॉलिक के सेन्ट थॉमस कॉलेज में अध्यापक है । उस समय अध्यापक को ढाई सौ तनख्वाह मिलती थी । वह पचास रूपये जमा करता, कुछ माँ को भेज देता और बाकी अपने पर खर्च करता था । माहौल में परिवर्तन होने के कारण वह बहुत दिनों तक कॉलेज में अजनबी बना रहा । मंगल का परिचय चतुर्थ वर्ष की एक छात्रा शबनम से होता है । मंगल की परिस्थिति जानते हुये भी उससे वह प्रभावित होती है । मंगल एक अध्यापक होने के नाते दूसरों के चेहरों को पढने का काफी अभ्यस्त हो चुका है । शबनम मंगल की आदर्शवादीता से प्रभावित होने के कारण कहती है --"मैं तो तुम्हारे परिवेश,तुमारे विचार, तुम्हारे आदर्शों को अपने जीवन में उतार लेना चाहती हूँ।"[१] मंगल के भी विचार देखने योग्य है --"कहानियाँ सच नहीं होती,लेकिन उनसे बडा सच और कही नहीं होता । मेरा जीवन भी कहानी बनकर रह गया है । कहानी पढना सुख देता है, लेकिन

कहानी बनना बड़ा दर्दीला होता है। गणित में ऋण और ऋण मिलकर धन बन जाते है, लेकिन जीवन में ऋण और ऋण ही रहता है,धन नहीं हो पाते।" [२]

कठीन परिस्थिति से सामना करते मंगल अपनी पढाई पूर्ण करता है और एक आदर्श अध्यापक बन जाता है। मंगल कहता है बुध्दि और समझ समयपर नहीं आती,यही दुर्भाग्य है। उसके मतानुसार किसी भी बिन्दुपर आकर जिन्दगी शुरु की जा सकती है। बस इसके लिए ईमानदारी और संकल्प-शक्ति चाहिए। शबनम उससे सिर्फ 'लव एट फर्स्ट साइट' से प्रभावित नहीं है तो क्लास में,क्लास के बाहर का व्यवहार,विद्यार्थियों के बीच मंगल की चर्चा, मंगल की ईमानदार वृत्ति, समाज की चिन्ता करनेवाले विचार आदि से वह प्रभावित है। इस प्रकार उपन्यास में मंगल एक अध्यापक के रूप में भी हमारे सामने आता है।

३:३:१:३ प्रेमी मंगल --

सैंट थॉमस कॉलेज में मंगल का अपनी चतुर्थ वर्ग की छात्रा शबनम से परिचय होता है और यह परिचय प्यार में बदल जाता है। वे दोनों इतने नजदिक आ जाते है कि विवाह बन्धन में बन्ध जाना चाहते हैं। मंगल भी इस प्यार में ऐसा बंध जाता है कि अपनी आर्थिक परिस्थिति सुधारकर शबनम को अपनी जीवन-साथी बनाने की ठान लेता है। शबनम को लेकर भविष्य के सपने देखने लगता है। दोनों की परिस्थिति में काफी अंतर होने के कारण मंगल अपने परिवेश की लड़की लाजो को अपनाना ठीक समझता है। वह अपने दिलपर पत्थर रखकर शबनम को अपना निर्णय सुनाता है और लाजो को अपने जीवन में लाता है। मगर लाजो की माँगें, उच्छृंखलता,सीमाहीन और गलित चारित्र्य से वह ऊब जाता है। ऐसे मौकेपर उसे शबनम याद आ जाती है।

लाजो के प्रति मंगल का दैहिक आकर्षण है और बेटी आस्था के प्रति ममता तथा माँ का प्यार मंगल के पास है। वह अपनी माँ को बहुत प्यार करता है क्यों कि माँ ने उसके लिए बहुत कष्ट उठाये है इसीलिए वह माँ को गद्दीपर आराम करती बैठी देखना चाहता है। बेटी आस्था को वह पराजित दिनों की

उपलब्धि मानकर उसे बहुत सहेजकर रखना चाहता है। वरसोवा के रेतपर मंगल और शबनम की भेंट हो जाती है। मंगल उससे फिरसे प्यार जताना चाहता है और खोई हुई जिन्दगी को फिर एक बार जीने तथा पाने की कोशिश करना चाहता है।

एक समय वह शबनम और लाजो दोनो को अपने साथ रखना चाहता है। उसमे एक ओर शबनम के प्रति भावुक प्यार है तो दूसरी ओर लाजो के प्रति दैहिक आकर्षण। इस प्रकार मंगल एक प्रेमी है। किन्तु दोनों ओर से उसे लाले पड जाते है। वह द्वन्द्वग्रस्त मानसिकतावाले प्रेमी का प्रतिनिधि चरित्र है।

३:३:१:४ लाजो के प्रति दैहिक आकर्षण ::

लाजो मंगल की बचपन की सहेली है। साथ-साथ खेले,साथ लडे भी है। लाजो मंगल की समवयस्क है। लाजो की शादी जब वह चौदह साल की थी तब हो गयी थी। वह ससुराल जाते समय मंगल बहुत रोया था, उसे लगा कि लाजो की शादी होकर शायद कुछ ऐसा हो गया है जो नहीं होना चाहिए था। लाजो अपने पति से झगडकर वापस पीहर में हमेशा के लिए आती है। मंगल उसकी तथा उसकी माँ की जिम्मेदारी लेता है,इसके पीछे मंगल का लाजो के प्रति कहीं-न-कहीं आकर्षण है। मंगल बचपन से ही घरवालों की नजरे चुराकर मूसे की कोठरी में लाजो से मिलता था और लाजो के ब्याह से पहले ही सम्बन्ध बनाये रखे थे। इसी कारण मंगल जवानी में भी लाजो के प्रति आकर्षित होता है।

लाजो कोटद्वार से बम्बई आती है। मंगल अपनी प्रेमिका शबनम को छोडकर लाजो को अपने जीवन में लाता है। लाजो को गर्भवति अवस्था में मंगल अपने घर लाता है। माँ ने उसे धर्मबेटी मान रखा था, इसी कारण लाजो और माँ में हमेशा गालियाँ,झगडा,मार-पीठ आदि चलता रहता है। लाजो के बारे में मंगल ने सोच रखा था कि --"बचपन की एक हमवर्गीय सहेली। सीधी-साधी घरेलू औरत.... औरत, जो मेरा घर और मेरे बच्चों को संभाले। और मैं निश्चिन्त

होकर अपनी पढाई और अपनी पार्टी का कुछ काम कर सकूँ।[३]" मगर लाजो का मँगल के साथ व्यवहार उससे उल्टा ही रहा है।

लाजो के दैहिक आकर्षण के कारण मँगल को बहुत कीमत चुकानी पडी है। उसकी प्रिय शबनम को छोडना पडता है, माता-पिता घर से निकल जाते है। मंगल इसी विवशता, मजबूरी महसूस करता है, लाजो को छोडना भी मुश्किल है और उससे साथ निभाना भी मुश्किल है। लाजो अपने पूर्व पति मूलचंद से मिलती है, मँगल तथा माँ-बाप को हमेशा कोसती रहती है। और एक दिन बच्ची आस्था को छोडकर हमेशा के लिए अपने पूर्व पति के पास जाती है। इस प्रकार मँगल को लाजो के स्वभाव का पता चलता है।

३:३:१:५ मानसिकता --

मँगल में हमेशा कुण्ठित मानसिकता दबी रहती है, वह हमेशा आर्थिक परिस्थिति, माता-पिता के सम्बन्ध तथा मध्यवर्ग की समस्या को लेकर सोचता रहता है। लाजो जब उसके माता-पिता के बारे में पूर्व जानकारी देती है तो मँगल का मन और भी अधिक कुण्ठित होता है। वह कहता है --"अभाव में पला हुआ आदमी ही अभावग्रस्त और शोषित की पीड़ा को समझ सकता है। फैशन के लिए सहानुभूति जतानेवालों से कोई काम नहीं होता है।"[४] मँगल अपनी माँ के बारे में सोचता है --"कौन-सी गहरी चुभन है, जो अम्मा को कचोटकर रख देती है? इतनी भक्ति, इतना कीर्तन, तीर्थ-स्थान यह कहीं दुकोसला तो नहीं है?"[५] मंगल की माँ ने मंगल के बाप के घर में अपने आदमी को छोडकर बैठी थी और बाप की पहली औरत को जहर देकर मारा था और चार महिने बाद मंगल का जन्म हुआ था। मँगल को पता भी नहीं कि वह किस बाप का बेटा है। वह कहता है -- "इज्जतदार कहलाये जानेवाले और कहलाये जाने के इच्छुक हम लोग अनेक अवसरोंपर कितने खोखले हो जाते हैं।"[६]

लाजो की माँगे बढ़ने लगती है - सिनेमा, होटल, कपडे सैर आदि से मँगल त्रस्त होता है। लाजो इतने पर भी चुप नहीं बैठती बात-बात पर वह अम्मा और

पिताजी के बारे में उसे कोसती रहती है। अब वह मंगल को भी खरी-खोटी सुनाती है। तब मंगल को लगता कि कौन-सी जिन्दगी लेकर आया है वह। मंगल के लिए जीना दिन-ब-दिन कठिन होता जा रहा था, नोंक-झोंक बढती जा रही थी, और अन्त में एक-दूसरे की खाल खिंचनेतक नौबत आती है। मंगल कहता है - " व्यक्ति को अपनी मानसिकता के अनुकूल नहीं पाते तो उसके प्रति तुम्हारा दैहिक आकर्षण भी समाप्त होने लगता है।"[७] माँ के तथा लाजो के बीच संघर्ष में मंगल कुछ भी नहीं कर सकता सिर्फ दर्शक की भूमिका लेकर कुढ़ता रहता है।

३:३:१:६ <u>मंगल की द्वन्द्वात्मक स्थिति --</u>

मंगल बम्बई आने से पूर्व बचपन की सहेली लाजो के प्रति आकर्षित था, परन्तु बम्बई आने पर उसका अपने ही कॉलेज की चतुर्थ वर्ष की छात्रा शबनम से प्यार होता है। शबनम और मंगल अपने भविष्य के सपनें देखने लगते हैं। शबनम मंगल की परिस्थिति एवं परिवेश से परिचित है फिर भी मंगल से वह प्यार करती है और उसके साथ विवाह करने पर तैयार है। शम्भूदा शबनम के बारे में मंगल से कहते हैं --" तुम्हारे बारे में इतना सब जानकर भी जो व्यक्ति तुम्हारे साथ अपनी जिन्दगी जीना चाहता है इसे तुम कैसे मना कर सकते हैं।"[८]

लाजो बम्बई आती है, मंगल का उसके प्रति पहले से ही दैहिक आकर्षण था वह बढ जाता है। और लाजो उसे अपने स्तर की लगने के कारण उसके साथ जिन्दगी बिताना चाहता है मगर शबनम का निस्सीम प्यार उसे द्वंद्वग्रस्त बना देता है। मंगल सोचता है --" मुझे लगता शबनम लाजो मेरे वर्ग की है, उस खोली में बैठकर जब मैं तुम्हारे बारे में सोचता, तो लगता तुम मुझसे बहुत उँची हो। यह जो तुम्हारा मेरे प्रति प्रेम और सम्मान है, वह सब और कुछ न होकर मेरे प्रति एक सहानुभूति भर है .... । और तब सोचना कि क्या किसी की सहानुभूति को लेकर उसके साथ प्रेम किया जा सकता है ? ..."[९]

वह शबनम के सामने होता, तो उसके योग्य समझाता तुलना या हीनता का भाव उसके मनमें नहीं उपजता। हर तरह से वह स्वयं को शबनम के योग्य

समझाता है। उसे लगता कि शबनम का प्यार और उसे पाकर अपना भविष्य मुठ्ठी में बांध लिया है। दूसरा मन सोचता है कि आज शबनम में उसके प्रति उत्साह है कल अगर कम हो गया तो उसकी नजरों में गिर जायेगा, उठे रहने के लिए शबनम त्यागना ही बुध्दिमानी है।

ऐसी द्वन्द्वात्मक स्थिति में मंगल सोचता कि लाजो और शबनम दोनों को भी अपना ले। लेकिन शबनम के पिताजी के साथ विश्वासघात करना भी वह नहीं चाहता। नहीं तो --"दोनों हाथ लड्डू बटोरने से मुझे कौन रोक सकता था ? मैं लाजो की देह में भी रमना और तुम्हारे संसार में भी।"[१०] और एक दिन सारी झिझक सारा संकोच छोडकर मंगल लाजो को अपनाता है। फिर भी उसकी द्विधा मनस्थिति का अन्त नहीं होता। लाजो को अपनाकर पछतावा करते हुये मंगल शबनम को पत्र में लिखता है --"एक सुन्दर,स्वच्छ जिन्दगी का सपना मेरी आँखों में पलता रहता था। लेकिन जब उस सपने को रूप देने का समय आया तो मैं गन्दगी और बदबू के दबकर रह गया। ऐसा क्यों हुआ ? क्या तुम्हारे सन्दर्भ में उगी हुई अपनी हीन भावना के कारण या लाजो के मांसल आकर्षण के कारण[११] ?" अन्त में अपने परिवेश,हीनता की भावना आदि को दोषी ठहराता है।

३:३:१:७ <u>परिस्थिति की न्यूनता जतानेवाला</u> -

मंगल मध्यवर्गीय युवक है। बचपन से आर्थिक अभाव के कारण उसमें परिस्थिति के बारे में मन में न्यूनत्व की भावना रही है। मंगल की माँ ने उसे कष्ट उठाकर पढ़ाया है। वह बम्बई के सेंट थॉमस कॉलेज में नौकरी करता है। परन्तु इतना होनेपर भी उसकी आर्थिक समस्या समाप्त नहीं होती। एक उच्च वर्ग की लड़की शबनम से उसे प्यार होता है परन्तु हमेशा वह शबनम और अपने में दूरी देखता रहता है। एक जगह मंगल की माँ कहती है कि शबनम अपने मोटरगाडी में बैठकर आयी थी,तेरे पास दो पहियों की साइकील भी नहीं है उसका बाप एडवोकेट है और तेरा ट्रक ड्राइवर। माँ की बातें मंगल को सच लगती है और वह अपने को

शबनम से बहुत छोटा महसूस करता है। और शबनम का जुहु का फ्लैट और अपनी वसईवाली खोली में मंगल काफी अन्तर देखता है। वह कहता है --" आर्थिक प्रभाव सबको दबा डालता है। मेरी इन सारी उपलब्धियों का व्यावहारिक मूल्य क्या था ?" [१३]

जब भी मंगल शबनम और अपने परिवेश की तुलना करता है, तब उसे लगता है --" और इस तरह की तुलनाओं के बीच मुझे लगता था कि मैं तुम्हारे प्रति अन्याय कर रहा हूँ। तुम्हें तुम्हारी भरी-पूरी हरियाली से उखाडकर अपने रेगिस्तान में बो रहा हूँ। मेरा यह रेगिस्तान आर्थिक अभावों का ही नहीं था, संस्कारों, परिवेश और आदतों का भी था। दो विरोधी सीमान्त: में डर जाता था। मुझमें एक अपराध बोध उत्पन्न होने लगता था।" [१३]

इसी अपराध बोध से मंगल शबनम से दूर चला जाता है और अपनी जिन्दगी का पूरा क्रम ही अव्यवस्थित कर लेता है। शबनम प्रतिभा और आर्थिक सम्पन्नता की तुलना करते वक्त मंगल के आर्थिक कॉम्प्लेक्स निकालने में बेकार रहती है।

३:३:१:८ भावना-प्रवण व्यक्ति --

मंगल भावना-प्रवण व्यक्ति है। उसे अपनी माँ के प्रति करुणा की भावना है, क्यों कि माँ को न पति से सुख मिला, न बच्चों से। इसीलिए माँ को वह गद्दी पर बिठाने का सुख देना चाहता है। पिता भले ही बुरे हो पर उनके लिए मंगल के दिल में सहानुभूति की भावना रही है। शबनम से वह सच्चा प्यार करता है उसमें निस्वार्थ भावना है। इसी भावना के कारण वह उसे आर्थिक अभावों के काँटों में घिसटना नहीं चाहता है। उसे लाजो के प्रति दैहिक आकर्षण रहा है। इसी दैहिक आकर्षण की भावना के कारण अपने सुखमय जीवन में वह काँटे बो देता है।

पार्टी के प्रति मंगल के मन में निष्ठा की भावना है। शम्मूदा और मंगल के वार्तालाप दृष्टव्य है --" भावना तो पत्थर में भी होती है। भावना तो इतनी अधिक महत्वहीन तो नहीं माना जा सकता। सृष्टि के विकास में क्या भावना का

कोई हाथ नहीं है और प्यार क्या भावना के अभाव में किया जा सकता है ... किसी के प्रति आकर्षण एक खिंचाव, एक लगाव क्या यह सब भावना - शून्य हो सकता है ? और भावना पवित्र नहीं होती क्या ? तो ..." [१४]

बच्ची आस्था के प्रति मंगल के मन में ममतामयी भावना दिखाई देती है, तो लाजो का पति मूलचंद के प्रति घृणा की भावना है। मंगल कहता है भावना जीवन के प्रति और विचारों के प्रति जीवन को कुण्ठित नहीं बनने देती है तो जीवन मे भावना का स्पर्श होना चाहिए। और शबनम को भावना तथा जीवन की प्रेरणा के रूप में माना था। मंगल के मन में हीनता की भावना दिखाई देती है -- " मैं सच कहता हूँ, शबनम। मैं उस पहले दिन तुम्हारे घर में एक मिनट के लिए भी सहज नहीं हो पाया था। एक गहरी और घनी आत्महीनता की भावना ने मुझे जकड़ लिया था।" [१५]

३:३:१:९ <u>स्वप्नों की दुनिया देखनेवाला</u> -

मंगल बचपन से ही अपने समाज से उभर उठने के सपने देखा करता था। माँ ने मंगल के लिए बहुत कष्ट सहे इसी कारण मंगल भी अपनी माँ को सुख देना चाहता है, पर उसका यह सपना अधूरा ही रह जाता है। वह कहता है -- " मेरा सपना था कि सागर के किनारे एक साफ-सुथरा छोटा-सा घर हो। मेरी माँ मेरे साथ हो। जितना भी बन पड़ेगा, उसे सुख देने की कोशिश करूँगा। अपनी किताबें हो, कुछ गम्भीर चिन्तन, अध्ययन हो, पार्टी का थोड़ा-बहुत काम हो और बस ....।" [१६]

शबनम को पाने का और एक सपना उसका था। रात-दिन उसको पाने का सपना वह देखा करता था। और इस सपने में अपने को उत्साहित महसूस करता था, उसे लगता भविष्य उसकी मुट्ठी में है। वह दुनिया को निचोड़कर उसकी उपलब्धि का अमन शबनमपर उड़ाना चाहता है।

वह देखा करता था कि कोटद्वार के नीमवाला पुराने घर के बदले हवेली, आंगन में संगमरमर, फूल झाड़ियाँ, नीम की घनी छाया में आराम कुर्सी, मेजपर देशी विदेशी पत्रिकाएँ, शबनम के हाथ की बनी हुयी चाय आदि। शबनम के रूप-सौन्दर्य की कल्पना करता हुआ देखता है -- " कन्धो तक लटकी हुई सुनहरी नोंकवाली तुम्हारी

सुगन्ध केश-राशि...और केतकी के फूलों-सी गुलाबी आभावाली बाहें। उँगलियों को पारदर्शी पोर और हर क्षण बोलना मुसकराना तुम्हारा चेहरा।[१७]" मंगल शबनम और अमर घई के वैवाहिक दाम्पत्य जीवन के सपने रचाता है।

मँगल के माता-पिता घर छोडकर जाते हैं उसी वक्त मंगल को दिवा-स्वप्न घेर लेते हैं। माता-पिता को वह मृतावस्था की हर स्थिति में देखता है। मंगल की स्वप्नों की दुनिया बहुत बड़ी है क्यों कि बचपन से लेकर शबनम की अन्तिम भेंट तक वह सपने देखता रहता है।

३:३:१:१० मॉ और लाजो के बीच पिसनेवाला --

लाजो मंगल की बचपन की सहेली है। मॉ ने उसे अपनी धर्म-बेटी मान रखा था। मँगल लाजो के दैहिक आकर्षण में आकर उसे पत्नी के रूप में घर लाता है। उसकी यही गलति उसके सान्सारिक जीवन को झाकझोर देती है। सास-बहु के रोज के झगडे,मार-पीट,गालियॉ,उँची आवाजें,दरवाजे की आवाज आदि से मंगल को निबटना पडता है। इनके बीच मँगल की दयनीय अवस्था हो जाती है। लाजो मॉ बननेवाली है तो भी वह मॉ से लडती है। मॉ को मंगल लाजो के अनैतिक सम्बन्ध में अधर्म लगता है, इसी कारण वह लाजो को घर में न रहने देने की कसम खाती हैं। इन दोनों के बीच पीसता मँगल कुछ भी नहीं बोल पाता, इनसे ग्रस्त होकर वह ज्यादातर घर से बाहर रहने की कोशिश करता है। मंगल के सामने यह सब चलता है। मंगल कहता है --" मैं इस तमाशे को समझ ही नहीं पा रहा था, सोच नहीं पा रहा था क्या करूँ, किसका पक्ष लूँ, किस तरफ से बोलू, क्या बोलू। एक अप्रत्याक्षित दुर्घटना मेरी आँखो के सम्मुख हो रही थी और मैं निस्सहाय दर्शक बना खडा था।"[१८]

मँगल की मॉ लाजो को दोषी मानकर लाजो को पिटती है, शोर-शराबा करती है। मँगल को मॉ के साथ तथा लाजो के साथ ग्लानि होती है।

वह कहता है --"यह भी जिन्दगी है क्या ? कूड़े और गन्दगी के ढ़ेरपर पड़ी हुई एक लावारिस लाश । जिसपर हर गली का कुत्ता पेशाब कर जाता है ... एक आदमी इतना विवश जीवन भी जी सकता है क्या ?" [१९]

३:३:१:११ पार्टी कार्यकर्ता --

कॉमरेड शाम्पूदा से प्रेरणा लेकर मंगल पार्टी का काम करने लगता है । शाम्पूदा शिवाजी कॉलेज के रिटायर्ड अध्यापक है, पार्टी के लिए अपना पूरा समय देनेवाले सच्चे देशभक्त है । मंगल सहाय्यक रूप में चरनी रोड, अंधेरी ,शिवाजी पार्क, बोरीवली, थाना आदि जगह कार्य करता है । स्वतन्त्र रूप से कोलिवाडा में काम करना प्रारम्भ करता है । उसके साथ शाम्पूदा के अतिरिक्त अन्य प्रोफेसर , फिलॉसाफर, फ्रेन्ड आदि हैं । पार्टी के कारण मंगल में त्याग की भावना निर्माण होती है । पार्टी की तथा अपनी नजरों में उठे रहने के लिए मंगल शबनम को त्यागना आवश्यक समझाता है ।

पार्टी के कारण मंगल को जेल भी जाना पडता है । वहाँ उसकी भेंट शाम्पूदा से होती है वे सच्चे कार्यकर्ता के गुण मंगल को बताते हैं, पार्टी मैन सबका होता है, उसका नीजि जीवन खुद का नहीं तो पुरे समाज का होता है । मंगल कोलिवाडा में काम करते वक्त वहाँ का परिवेश देखता है --"अज्ञान का अंधेरा, शोषण और अंध:विश्वास का अंधेरा । परिणामस्वरुप शराब में डूबे हुए तस्करी और सस्ती ऐयाशी में फँसे हुए । झोपडी के बाहर फैले हुए ताश के पत्ते । बात-बात में मार-पीट । खाली बोतले... रोज - रोज फूटते हुए सिर ।" [२०]

मंगल के विचार भी पार्टी के लिए योग्य है --"गरीबी है, गरीबी के कारण है, गरीबी को दूर किया जा सकता है और गरीबी दूर करने के उपाय है जिन लोगों ने गरीबी को भाग्य के साथ जोडा है, वे ही गरीबों के सबसे बडे दुश्मन है और भाग्य के नामपर अपने द्वारा किये गये शोषण को बनाए रखना चाहते हैं ।" [२१] मंगल जब शबनम और लाजो से प्यार करता है । एक को अपनाने में

में कठिणाई महसूसता है तो यह प्रश्न शाम्पूदा के सामने रखता है। शाम्पूदा कहते है कि, पार्टी और रोमान्स साथ-साथ नहीं चलते। अपने प्रति ईमानदार व्यक्ति ही जनता और समाज की सेवा के काबिल और उनके प्रति ईमानदार हो सकता है। मंगल अन्त में पार्टी का काम सम्भालकर बेटी आस्था के साथ नई जिन्दगी शुरु करता है। क्यों कि --" लेखक ,विचारक और राजनेता को हमेशा निर्बल का और प्रतिपक्ष का पक्षधर होना चाहिए।" २२

मंगल पार्टी का कार्यकर्ता है किन्तु सच्चा पक्षधर नहीं है। सच्चा पार्टी मैन स्वार्थी नहीं होता। मंगल का लाजो के प्रति दैहिक आकर्षण और शबनम से छुटकारा पाने के लिए पार्टी की टट्टी का सहारा लेनेवाला बाषाडंबरी कार्यकर्ता है।

३:३:१:१२ मध्य-वर्ग का प्रतिनिधि चरित्र --

मंगल पहाडी प्रदेश का एक युवक है जो कि बम्बई के एक दूरस्थ उपनगर वसई में रहता है। वसई का परिवेश-कमरे के बाहर कीचड,अन्धेरा,गन्दगी है। वह कमरा मंगल को उसके जिन्दगी का प्रतीक लगता है। मंगल का परिवेश, परिस्थिति मध्यवर्गीय है। शबनम के मतानुसार मंगल विशिष्ट वर्गीय होने के कारण विशिष्ट है। मगर मध्यवर्ग में भी बच्चन जैसे लोग मानवीयता का प्रमाण देते हैं। मंगल बच्चन के बारे में कहता है --" जिन लोगों को बहुत हीन,अपने से कहीं गया-गुजरा और छोटा मानते हैं वे ही अनेक घटनाओं पर प्रमाण देते हैं कि सफेद पोशों और पढे-लिखे लोगों से कहीं अधिक मानवीय,संवेदनशील और करुणापूर्ण होते हैं।" २३

अपनी आर्थिक स्थिति,परिवेश आदि के कारण मंगल शबनम से शादी करने से नकारता है। मध्यवर्ग में रही अम्मा भी पिताजी से समझौता नहीं कर पायी और मंगल से भी नहीं। मध्यवर्गीय संस्कारों के कारण ही मंगल लाजो के साथ अनैतिक सम्बन्ध बचपन से ही रहे है। मध्यवर्गीय सास-बहू के सम्बन्ध में पीसनेवाले मध्यवर्गीय नायक के रूप में मंगल को चित्रित किया गया है।

सात-आठ सौ रूपये तनख्वाह में तुम सा पी सकते हो । मौज-मजा नहीं कर सकते । इसी आर्थिक तंगी के कारण मंगल और लाजो में दूराव बढ़ता जाता है । मध्यवर्ग का प्रतिनिधि चरित्र मंगल शबनम के सच्चे प्यार को ठुकराता है । एक जगहपर आस्था (बच्ची) की माँ मर गई कहना,इस प्रकार मध्यवर्ग के कुछ दोष मंगल में दिखाई देते हैं । मंगल जिस जगह काम करता है वहाँ का परिवेश मध्यवर्गीय है -- "अज्ञान का अँधेरा,शोषण और अंध:विश्वास का अँधेरा । परिणामस्वरुप शराब में डूबे हुए तस्करी और सस्ती ऐयाशी में फंसे हुए । झोपडी के बाहर फैले हुए ताश के पत्ते । बात-बात में मार-पीट । खाली बोतले .... रोज-रोज फूटते हुए सिर ।" २४

अन्त में मंगल शबनम के पूर्नमिलन का प्रस्ताव सामने रखता है और मध्यवर्ग की सेवा करने का निमंत्रण देता है --"मेरे और इस बस्ती के इन बीसियों लोगों के बीच तुम अपने लिए एक सम्मानपूर्ण स्थान हमेशा पाओगी ।" २५

३:३:१:१३ निष्कर्ष --

' प्रिय शबनम ' उपन्यास का प्रमुख पुरूष पात्र मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाला और संघर्ष करके ऊपर उठनेवाला,अपने जन्मजात संस्कारों से मुक्ति के प्रयास कर अभिजात संस्कारों को पाने की चेष्टा करनेवाला व्यक्ति है । मंगल एक देहाती युवक होते हुये भी बम्बई जैसे महानगर में आकर जनसामान्य के लिए कार्यरत रहता है यही उसके चरित्र की एक विशेषता है । मंगल एक आदर्श अध्यापक है । मंगल का एक रूप प्रेमी का है तो दूसरा वर्ग संस्कार के कारण दैहिक आकर्षण का है । विकृत परिवार का एक पात्र मंगल उससे छूटकारा पाने की कोशिश करता है । शबनम को अपनाये या लाजो को की द्विधा अवस्था में गलत निर्णय लेकर सुख को ठुकरा देता है । वह भी कहता है --"मेरे सुख की गली थोडी देर के बाद हमेशा अन्धेरे कानों की ओर मुड जाया करती है ।" २६

जिन लोगों ने गरीबी को भाग्य के साथ जोडा है उन लोगों की

अंध:विश्वास को मिटाना मंगल चाहता है। आर्थिक अभाव में पला मंगल स्वप्नों की दुनिया में खोता हुआ दिखाई देता है। माँ,पिताजी तथा लाजो के व्यवहार से तंग आकर परिवेश की मानसिकता को कोसता रहता है। मध्यवर्ग के संस्कार के कारण उसमें दैहिक आकर्षण दिखाई देता है। भावना प्रवण व्यक्ति मंगल कई स्थानोंपर भावना में बहता हुआ दिखाई देता है। अपनी माँ,बच्ची आस्था,पिताजी, लाजो आदि को लेकर गृहस्थी के प्यारे सपने भी सजाता है। अन्त में मध्यवर्ग के बीच काम करने को हमेशा तत्पर दिखाई देता है।

निष्कर्षत: कह सकते है कि 'प्रिय शबनम ' उपन्यास का प्रमुख पुरूष पात्र तथा नायक मंगल ही है।

३:३:२ शबनम --

३:३:२:१: उच्च वर्ग का पात्र (नायिका) --

शबनम सैंट थॉमस कॉलेज की चतुर्थ वर्ष की एक छात्रा है। उसके पिता नगर के बड़े प्रसिध्द एडवोकेट है। शबनम छ: वर्ष की थी तब उसकी माँ चल बसी। शबनम के पिताजी चाहते तो दूसरी शादी कर सकते थे मगर वे अपनी जगह आदर्शवादी,चरित्रवान तथा नैतिक होने के कारण उन्होंने ऐसा नहीं किया। शबनम को प्यार देने तथा संस्कारशील बनाने के लिए उन्होंने अपनी दुनिया सीमित करके एक संयमित और व्यवस्थित जीवन जीने लगे। उन्होंने शबनम को किताबों और पैन के अलावा कोई गिफ्ट नहीं दी है। वे कहते भी हैं कि इतना पढने के बाद भी तुम अपना भला-बुरा नहीं समझ सकती तो इतनी शिक्षा का कोई फायदा नहीं है।

आदर्शवादी पिताजी के संस्कार में पली शबनम अपने ही कॉलेज के प्राध्यापक मंगल से प्यार करती है। शबनम चार वर्ष तक मंगल को जाँचती है और उसके बाद वह मंगल के जीवन में आना चाहती है। मंगल के मन में बनी हीनता की भावना को निकालने की वह पूरी-पूरी कोशिश करती है। मंगल अपनी बचपन

की सहेली के शारीरिक आकर्षण में आकर शबनम को नहीं अपना पाता । शबनम मंगल से नाराज न होकर स्क्वाड्रन लिडर अमर घई से विवाह करती है । पति सुख शबनम के नशीब में न होने के कारण अपने बच्चे के साथ जीवन बिताती है । पति चार वर्ष से लापता है फिर भी उसकी प्रतीक्षा करती रहती है । मंगल से आखरी भेंट हो जाती है जिसमें मंगल शबनम को अपने परिवेश में आमंत्रित करता है ।

इस प्रकार ' प्रिय शबनम ' उपन्यास की नायिका शबनम ही है । वह उच्च वर्ग का पात्र होते हुये भी मध्यवर्ग के प्रति घृणा न करके मध्य-वर्ग के लोगों के कॉम्प्लेक्स दूर करने का प्रयत्न करती है । उसमें उच्चवर्ग के संस्कार है,जो उसके व्यक्तित्व को किसी भी स्थिति में निखार देते हैं ।

३:३:२:२ परिष्कृत एवं संस्कार से युक्त —

आर्थिक सम्पन्नता और प्रतिभा की शबनम में कोई कमी नहीं है । उच्चवर्गीय होने के बाद भी वह उस वर्ग के खोखलेपन से घृणा करती है । उसके उपर उसके पिताजी के अच्छे संस्कार है, पिताजी ने कभी भी शबनम को माँ की कमी महसूस नहीं होने दी । प्राध्यापक मंगल से वह प्यार करती है,उसके मन में बसे कॉम्प्लेक्स को बाहर निकालने का प्रयत्न करती है । पिताजी में जो अच्छे गुण है वह शबनम में भी दिखाई देते हैं । पिताजी ने अपने सुख की चिन्ता न करके शबनम को सुखी देखना चाहा, उसी प्रकार शबनम भी मध्यवर्ग में पला-बढा मंगल को सुखी देखना चाहती है उसके मन में बसी ही हीन-ग्रंथी को निकालना चाहती है । इन सबका कारण एकही है कि शबनम परिष्कृत संस्कारवाली नारी है ।

मंगल ने सुख,जिन्दगी और विवेक क्या होता है यह शबनम से सिखा है । जिस तरह मरे हुये बच्चे को बन्दरिया अपनी छाती से चिपकाये रहती है उसमें परम्परागत दृष्टि दिखाई देती है इस दृष्टि से चिपके न रहकर उससे मुक्ति पाने को शबनम मंगल को कहती है । अपनी सम्पन्नता,परिवेश,संस्कार उसने कभी भी मंगल पर नहीं थोपे है । शबनम मंगल के घर पहूँचकर मंगल के माँ के पैर छूती है,

यहाँ शबनम की संस्कारशील तथा बडप्पन वृत्ति दिखाई देती है। मंगल की माँ में अपनी माँ को वह देखती है। शादी के बाद भी माँ के साथ रहना चाहती है । इस प्रकार शबनम के पास उच्च वर्ग की साधन - सम्पन्नता, उच्चवर्ग की सभी चीजों के होते हुये भी उसमें मध्य तथा निम्न वर्ग को नीचा दिखाने की वृत्ति नहीं है । क्यों कि उस के संस्कार ही शबनम में यहाँ दिखाई देते हैं।

३:३:२:३ वर्गीय अभिजात्य के प्रति घृणाभाव --

शबनम को ऊपरी ताम-झाम पसन्द नहीं है। वह आदमी का स्वभाव, उसकी मानवीयता देखती है। वह मंगल से कहती है --" तुम्हारा पुरूषपन, तुम्हारी मानवीयता और तुम्हारा अध्ययन मैं सभी से प्रभावित हुई हूँ, मंगल। दुनिया में पैसा ही सबकुछ नहीं होता। हाँ, उनके लिए हो सकता है,जिन्होंने कभी पैसा देखा न हो। तुम्हारे जैसा आदमी हमारे वर्ग में कहाँ मिलेगा। "[२७] वर्गीय अभिजात्य भी बडी हल्की,बहुत चीप है। वह इसी परिवेश में पली है इसी कारण इन लोगों के खोखलेपन जानती है। इन लोगों में शारीरिक अंगों और बिस्तर से लेकर अपने फूहडपन तक को श्रेष्ठ बनाकर दिखलाने की प्रवृत्ति होती है। प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति किसी के सामने इसलिए कुण्ठित होता है कि सामनेवाला आदमी उसकी अपेक्षा आर्थिक रूप में सम्पन्न है। वह कहती है --" आर्थिक सम्पन्नता और प्रतिभा में कोई तुलना नहीं हो सकती मंगल। तुम्हे यह मैं समझाऊँ ? बान्द्रा और कोलाबा की कॉल गर्ल्स मेरे डैडी से ज्यादा कमाती है तो क्या वे मेरे डैडी से अधिक सम्मानित है ?" [२८]

शबनम को व्यक्तिवादी लोगों से भय लगता है,क्यों कि अधिकांश व्यक्तिवादी दुश्चरित्र और अहंभावी होते हैं। आराम को वह हराम नहीं मानती, इसमें उसे भावुकता ही ज्यादा दिखती है और भावुकता व्यवहार्य नहीं होती। इस प्रकार जिन वर्ग में पली-बढी शबनम उस वर्ग के प्रति असन्तोष प्रकट करती है।

३:३:२:४ बहुमुखी व्यक्तित्व --

शबनम का व्यक्तित्व सच-मुच ही बहुमुखी है। इस बात के प्रमाण उसके संस्कारक्षम विचार तथा व्यवहार दे जाते हैं। वह सुन्दर,बुध्दिमानी है। मंगल से प्यार करते समय जल्द बाजी नहीं करती तो मंगल को चार बरस तक जाँचकर उसे प्यार तथा उसके साथ जीवन बिताना चाहती है। मंगल की कुण्ठाओं,समस्याओं, हीनता बोध को उससे अलग करना चाहती है। मंगल से तथा मंगल के वर्ग के प्रति उसमें आस्था दिखाई देती है। मंगल को हर स्थिति में साथ देने को तैयार है। मंगल को वह अपनी आर्थिक सम्पन्नता तथा परिवेश से कमी भी नीचा दिखाना नहीं चाहती। मंगल,मंगल का घर तथा मंगल के लोगों के लिए कुछ भी करने की कोशिश उसमें है। मंगल से नकारा जानेपर भी उससे नाराज न होकर उसे शुभकामनाएँ देती है और उसके जीवन से अलग हो जाती है। वह अपने पिताजी से बहुत प्यार करती है,उनसे अलग रहने की कल्पना भी उसे नहीं सहती। वह यह बात मंगल को आखीर तक नहीं बताती कि मंगल, वह और उसके डैडी साथ में रहेंगे।

३:३:२:५ निस्सीम प्रेमिका --

शबनम मंगल से प्यार करती है,मगर उसके प्यार में जल्दबाजी नहीं है। शबनम मंगल से परिचित होने के दो वर्ष उसे जाँचती है,तीसरे साल मंगल के विषय में सोचती है और चौथे साल में मंगल के निकट आकर उसे अपनाना चाहती है। शबनम ने मंगल में पुरूषपन ,मानवीयता देखी है और उससे वह प्रभावित हुई है। मंगल और शबनम इतने निकट आ गये कि मन-ही-मन अपने भविष्य के सपने देखने लगते है। शबनम मंगल को शादी की बात करने के लिए अपने पिताजी से मिलने के लिए कहती है। मंगल अपना परिवेश,आर्थिक स्थिति उसके सामने रखता है। परन्तु शबनम मंगल से अपना प्यार देकर ,एक दृष्टि देकर उसकी कुण्ठाओं और समस्याओं को दूर करना चाहती है। अपने पिता की बात उसके सामने रखती हुयी कहती है, उसके पिताजी भी मंगल जैसे अतीत में रहे होंगे,उन्होंने मेहनत और ईमानदारी से सब पाया है।

शबनम मँगल का क्लास में तथा क्लास के बाहर का व्यवहार, विद्यार्थियों के बीच चर्चा, ईमानदार वृत्ति, समाज की चिंता करनेवाले पहलु आदि बातों से प्रभावित होकर उसे अपनाना चाहती है। मँगल की जिन्दगी में उसके बचपन की सहेली लाजो आ जाती है जिसके मौसल आकर्षण में आकर वह शबनम को अपने जीवन से निकाल देता है। उसे अपना निर्णय सुनाते हुए वह कहता है कि, वह उसके परिवेश को सह नहीं पायेगी। इस पर शबनम कहती है --"सहने का कोई प्रश्न ही नहीं है, मैं तो तुम्हारे परिवेश, तुम्हारे विचार, तुम्हारे आदर्शों को अपने जीवन में उतार लेना चाहती हूँ।"[२९] मंगल को समझाती है कि हमारे देश में प्यार की परिणति विवाह में होती है, प्यार आध्यात्मिक चीज नहीं है, प्यार या सहवास झोली फैलाकर नहीं माँगा जाता।

शम्मूदा शबनम के बारे में कहते है कि वह एक शालीन तथा गंभीर प्रवृत्ति की लडकी है, उसमें एक छोटा-सा स्वार्थ था वह चाहती थी कि विवाह के बाद मँगल उसके घर में रहे, ताँकि उसके पिता अकेले न रह जाये। वह अपने पिता से बहुत प्यार करती है। अपने बेटे को बहुत प्यार देती है। इस प्रकार शबनम - मंगल से विदा होने पर भी उसके प्रति गर्व महसूसती है, उससे नाराज न होकर शेष शुभकामनाओं के साथ उसको ऊपर उठने को कहती है। -"सचमुच ही शबनम एक विलक्षण व्यक्तित्व है। प्रेमी से प्रेम किया तो पूरी निष्ठा के साथ और जब यही पति से किया तो वही निष्ठा इधर मोड ली, और पति के न रहते भी उसे डिगने नहीं दिया।"[३०]

३:३:२:६ <u>प्रतीक्षारत पतिव्रता</u> --

शबनम मँगल का पूरा व्यक्तित्व देखने के बाद ही उसके साथ अपना घर बसाना चाहती है। किन्तु मंगल अपनी हीन ग्रंथी को जादा महत्व देकर शबनम को अपनी जिन्दगी से निकाल देता है। शबनम के दिल को अवश्य ही ठेस पहुँचती है, मगर वह दु:खी न होकर मँगल को शुभकामनायें देकर विदा लेती है। उसकी नजरों में मँगल के प्रति सम्मान बढता ही है। शबनम का विवाह स्क्वाड्रन लिडर

अमर घई के साथ होता है। वह एक बच्चे को माँ भी बन जाती है। उसके पिताजी गुजर चुके है।

बांगला देश की मुक्ति के समय से उसके पति लापता है। शबनम चार बरस उसकी प्रतीक्षा कर रही है। वह अपने बेटे को महसूस नहीं होने देती कि उसके पिताजी नहीं है। शबनम अमर के लिए बाथरूम में तौलियाँ टाँग देती है, स्लीपर रखती है, बूटों पर पालिश करती है, नाश्ता लगाना नहीं भूलती, पलंग पर चादर बदलना नहीं भूलती। उसे आज भी विश्वास है कि अमर वापस आयेगा इसीलिए अमर की तस्वीर पर आज तक उसने माला नहीं चढाई है। लम्बी प्रतीक्षा सफल होती है इस आशा को शबनम ने भी पाल रखा है। मंगल कहता है --" तुम्हारी प्रतीक्षा सफल हो, अपने पति के प्रति, तुम्हारी निष्ठा सार्थक बने।" [३१]

३:३:२:७ निष्कर्ष --

'प्रिय शबनम' उपन्यास की नायिका शबनम भारतीय नारी का वह रूप है जो पति से निष्ठापूर्वक प्यार करती है। शबनम मंगल को दस बरस के बाद मिलती है तब वह पूर्व की शबनम न होकर प्रतीक्षारत पतिव्रता शबनम को देखता है। मंगल लाजो के कारण शबनम को छोड़ता है। मगर शबनम को मंगल फिर से पाना चाहता है, परन्तु शबनम के पास पति निष्ठा होने के कारण मंगल के विचारों पर वह ध्यान नहीं देती है। इस प्रकार 'प्रिय शबनम' उपन्यास की नायिका उच्चवर्ग का पात्र होते हुये भी, परिष्कृत संस्कारधाम है। वर्गीय अभिजात्य के दिखावटी सम्बन्ध उसे नहीं रूचते है। मंगल से उसका निस्सीम प्यार दिखाई देता है। इस प्रकार शबनम एक बहुमुखी व्यक्तित्व है। एक आदर्श प्रेमिका, आदर्श पुत्री, आदर्श पतिव्रता और आदर्श माता है।

३:३:३ लाजो --

३:३:३:१ लाजो का परिचय --

लाजो मंगल की कोटद्वार की बचपन की सहेली है। मंगल और लाजो

की माँ विधवा थी । उसका एक भाई था जिसके साथ मंगल की बहन सुक्खी भाग गयी थी । लाजो मंगल की हम उम्र है । मंगल नवीं में था तब लाजो की शादी हो गयी । लेकिन थोडे ही दिनों में लाजो वापस आकर माँ के साथ रहने लगती है । उसकी एक बच्ची भी है । लाजो की माँ को उसकी बड़ी चिंता रहती है । मंगल लाजो तथा उसकी माँ को सहायता करने का आश्वासन देता है ।

लाजो बम्बई आ जाती है आते वक्त रास्ते में उसकी बच्ची मर जाती है । मंगल की माँ ने लाजो को धर्म-बेटी मान रखा था परिणामस्वरुप लाजो माँ के साथ न रहकर अलग रहती है । कुछ ही दिनों में वह सहज हो जाती है । मंगल उसके रहने का तथा राशन पानी का प्रबन्ध कर देता है । वे दोनों शरीर से एक-दूसरे के हो जाते है । लाजो को एक बच्ची है । मंगल अपनी माँ के साथ लाजो को रखता है । किन्तु दोनों हमेशा झागडते रहते है । माँ घर छोड चली जाती है । लाजो मंगल को भी खरी-खोटी सुनाती है और मंगल के यहाँ अय्याशी न मिलते देख अपने पूर्व पति मूलचंद के पास हमेशा के लिए चली जाती है । बच्ची आस्था को मंगल के पास छोडकर मूलचंद एवं लाजो मंगल को ब्लैकमिल करती रहती है ।

३:३:३:२ प्रदर्शन प्रिय --

लाजो को खाने-पहनने का, घुमने-फिरने का, सिनेमा-नाटक आदि का शौक था ही इसके साथ खुद को प्रदर्शित करने की भावना भी उसमें थी । इसी प्रवृत्ति के कारण वह अपना पति मूलचंद गरीब होने के कारण उसके साथ नहीं रह पायी । लाजो अपनी प्रवृत्ति के कारण मंगल को आकर्षित करती है और इस प्रवाह में मंगल बह जाता है । परिणामस्वरुप लाजो गर्भवति हो जाती है । अनजाने ही उन दोनों का विवाह हो जाता है ।

आगे लाजो के मैत निमन्त्रण का मंगल को पश्चाताप होता है । मंगल लाजो को माँ के पास रखता है । लाजो और माँ मे हर दिन झागडा होता रहता है । लाजो ने एक बच्ची को जन्म दिया है । लाजो हमेशा माँ को नीचा दिखाने

की कोशिश करती है। सास-ससूर घर से जाने के बाद भी लाजो मंगल को हमेशा कोसती रहती है और मंगल से पैसे लेकर कभी नयी सहेलियों के यहाँ, कभी सिनेमा देखने,तो कभी गाँव जाती है। अन्त में अपने मूल पति के पास हमेशा के लिए चली जाती है। अपने पति पर भी रौब जमाने की कोशिश करती है। उसके इसी स्वभाव का प्रमाण उसका यह वाक्य है --"सिर्फ सुबह-शाम का खाना ही क्या जिन्दगी होती है ... इत्ता बड़ा शहर न लोगों से मिलना-जुलना... कितने महीने हो गये है,एक पिक्चर भी नहीं देखी।"[32]

३:३:३:३ मुँहफट एवं झगडालु औरत --

लाजो पूर्व पति को अपने अनुकूल न पाकर उससे लड़कर अपनी माँ के साथ मैके रहती है। बम्बई आनेपर कम बोलनेवाली लाजो संकुचित नारी लगती है। यही मौन स्वभाव मंगल को भा जाता है। मगर हम देखते है कि लाजो को जब मंगल माँ के पास लाकर रखता है,तो लाजो का दूसरा ही रूप दिखाई देता है। मंगल की माँ ने उसे धर्म-बेटी माना था इसी कारण लाजो-मंगल का रिश्ता उससे सहा नहीं जाता। इसी कारण लाजो से झगडती है और लाजो को माँ का चरित्र मालूम होने के कारण वह ईंट का जवाब पत्थर से देती है। माँ को डायन,बुढ़िया आदि कहकर उसके खानदान का उल्लेख करके गालियाँ देती है। गन्दी-गन्दी गालियाँ देना,चिल्लाहट, शोर-शराबा मंगल के घर में हमेशा चलता रहता है। लाजो की बोली में हमेशा तीखा व्यंग्य दिखाई देता है।

लाजो सिर्फ मंगल की माँ से झगडती है ऐसी बात नहीं तो वह मंगल से भी बात-बात पर बिगड़ती है। उसे कहती है अपनी माँ को ही गले में लटकाकर घूमना था तो उसे क्यों खराब किया। अम्मा के बारे में लाजो कहती है --"बडी चरित्तरवाली बनेगी .... सो सो चूहे खायके... गीता बाँचेगी... भक्तन बनेगी.... गंगा स्नान,धर्म-कर्म..... भजन-कीर्तन.... तीरथ कुलछनी कहीं की ..... ।"[33] एक बार लाजो और मंगल की माँ में कहा-सुनी हुयी। लाजो ने अम्मा को बट्टा

मार दिया,अम्माने किरोसिन की बोतल लाजो के सिर मारी । लाजो के सिर काँच के टुकडे गहरे उतरने के कारण उसका ऑपरेशन कराया गया । अम्मा और पिताजी घर छोड़ जाते है फिर भी वह उनको लेकर कोसती रहती है । मंगल और उसमें भी नोंक-झोंक बढ़ती,एक - दूसरे की खाल खिंचने की नौबत आती है । लाजो मंगल को पार्टी को,माँ-बाप तथा मंगल के खानदान को लेकर कोसती है,गालियाँ देती है । घर के बाहर बैठकर चिल्ला-चिल्लाकार मंगल को कहती है --" पीट ले,तू भी पीट ले । तेरी माँ ने जो कसर रखी थी,उसे तू पूरी कर ले ।" [३४]

३:३:३:४ उच्छृंखल तथा फूहड नारी --

लाजो अपने को प्रदर्शित करके मंगल को फँसा लेती है । मंगल लाजो की ओर आकर्षित होकर वासना के प्रवाह में बहता है । लाजो का चरित्र ही उच्छृंखल है । प्रारंभ में पति के साथ झगडकर माँ के पास रहती है,क्यों कि पति उसकी अपेक्षाएँ पूर्ण नहीं कर पाता । मंगल को अपनी आकर्षित कर उसके साथ रहती है । मगर मंगल से भी उसके सुख स्वप्न पूर्ण न होते देख फिर अपने पूर्व पति के पास चली जाती है । मंगल की मजबूरी का लाभ उठाकर मंगल पर अपना रौब जमाना चाहती है । पार्टीबाजी छोडकर चैन तथा विलास की जिन्दगी जीने के लिए मंगल को कहती है । मंगल दोनों जगह का खर्च चलाता है लाजो को उसकी चिन्ता नहीं है । उसे तो घूमना-फिरना,होटल,सिनेमा-नाटक आदि चाहिए । लाजो को बात करने की जरा भी तमीज नहीं है क्यों न वह मंगल हो या मंगल की माँ । लाजो - मंगल के शारीरिक सम्बन्ध में वह मंगल को ही दोष देती है । वह कहती है शादी से पहले गाँव में मूसे की कोठरी में छिपकर मंगल ने ही उसे सब सिखाया है । लाजो की जबान इतनी गन्दी है कि खाते वक्त,रात को सोते वक्त,कभी-न-कभी,किसी-न-किसी बहाने सास-ससूर को याद कर फुटपाथवालों की भाषा में कोसती है ।

लाजो की रहन-सहन भी अच्छी नहीं है जरासी बात पर मंगल को फट - - कारती है । सिगडी सुलगाने के लिए किताबों के पन्ने फाडती है, मुन्नी को साफ

करने के लिए ताजा अखबार का उपयोग करती है ।

आर्थिक स्थिति का विचार न करके घूमना-फिरना, सैर-सपाटे, नयी सहेलियों के घर जाना, गाँव जाना आदि करती रहती है । वह इतनी गलित नारी है कि मंगल से प्यार का नाटक करती हुअी पाँच साल से अपने पूर्व पति से मिलती रहती है । और अन्त में उसके पास हमेशा के लिए चली जाती है । उसके अय्याशी स्वभाव के कारण पैसों के लिए बच्ची आस्था के बदले मंगल को ब्लैकमिल करने तक उतर आती है । मंगल कहता है --" उसके नारीत्व में एक अपरिष्कृति है, सीधा-साधा पत्नीत्व भी नहीं है और यह अपरिष्कृति जब उच्छृंखल हो जाती है, अपनी वाणी और अपने व्यवहार में, तो वह और भी भद्दी लगने लगती है ।" [३५]

३:३:३:५ निष्कर्ष ---

' प्रिय शबनम ' उपन्यास में लाजो संघर्ष निर्माण करनेवाली स्त्री पात्रा है । लाजो को हम न तो प्रमुख पात्र कह सकते न गौण । लाजो में मध्यवर्ग के सभी गुण दिखाई देते है । उसका चरित्र निम्न कोटि का है । इसका प्रमाण है - लाजो और मंगल के बचपन के सम्बन्ध, पति के साथ व्यवहार तथा मंगल तथा लाजो के जवानी के सम्बन्ध और फिर पूर्व पति और लाजो के सम्बन्ध । लाजो मंगल को सैक्ट में डालकर उसका फायदा उठाती है । अपना रंग बदलने में लाजो चालाक दिखाई देती है । मातृत्व तो उसके दिल में है नहीं । बच्ची आस्था के साथ मौसी या एक गाँववाली के रूप में नाता जोड लेती है । आस्था के बदले में मंगल को ब्लैकमिल करती है । परिस्थिति से समझौता करने की प्रवृत्ति उसमें नहीं है । उसे अय्याशी तथा खूद को प्रदर्शित करने का बाह्याडंबरी फूहडपन पसंद है । उसके मूँहफट तथा झगडालु स्वभाव के कारण उपन्यास में संघर्ष निर्माण होता है तथा नायक मंगल का पतन होता है । उसका मन चंचल, सीमाहीन तथा गलित है । इस प्रकार अशिक्षित व्यक्ति भी कभी अत्यन्त सहृदयी, स्नेही एवं उदार प्रकृति के होने देखे गये हैं, पर लाजो में उस प्रकार का कोई कण कभी नहीं दिखाई देता । लाजो लालसा, स्वार्थपरता और उच्छृंखलता का प्रतिरूप है ।

३:३:४ शम्मूदा

३:३:४:१ शम्मूदा का परिचय --

शम्मूदा एक क्रान्तिकारी पार्टी के बम्बई केन्द्र के नेता है । शिवाजी कॉलेज से रिटायर होने के बाद उन्होंने पूरा समय पार्टी को दिया था । शम्मूदा के पिताजी जमींदार थे । शम्मूदा के विचार बचपन से ही क्रान्तिकारी थे । उन्हें समाज से, नीति-नियमों से शिकायत थी, छटपटाहट थी । गाँव से शहर आनेपर उन्हें अपने जैसे छटपटानेवाले लड़के मिले जिसमें आक्रोश था । बड़े-बड़े लोग उन्हें दिशा-निर्देश कर रहे थे । शम्मूदा के भाषण से छात्र प्रभावित थे । इस प्रकार वे पार्टी के अच्छे कार्यकर्ता बन गये । एक लड़की उनके ज्यादा ही करीब आ गई । वे एक-दूसरे को चाहने लगे, शम्मूदा तो भविष्य के सपने भी उसके साथ देखने लगे । परन्तु कॉमरेड रॉबिन मुकर्जी ने शम्मूदा को बताया कि वह लड़की जासूस है दूसरी पार्टी के लिए काम करती है । शम्मूदा को इसी कारण गहरी चोट लगी ।

शम्मूदा का विवाह कम उम्र में ही हो गया था, मोह के बन्धन में न बन्धने के कारण उनकी पत्नी गाँव के उनके किसी दोस्त के साथ भाग गयी, उनके हिस्से की जायदाद रिश्तेदारोंने दबोच ली । उनके भाई के परिवारवालों को पुलिसने इतना सताया कि एकलौते भाई ने दु:खी होकर आत्महत्या कर ली । उनके अनाथ बच्चे दवा-पानी के लिए तड़प-तड़पकर मर गये । शम्मूदा पर इसका कोई असर नहीं हुआ । अब वे बम्बई में स्वतन्त्र रूप से पार्टी का काम कर रहे है । मंगल जैसे नवयुवकों को पार्टी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे है । इस प्रकार शम्मूदा का जीवन एक त्रासदी से युक्त बन गया है । लेकिन वे सच्चे देशभक्त, क्रान्तिकारी तथा अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान पार्टीमन और जनसेवक है ।

३:३:४:२ क्रान्तिकारी नेता (देशभक्त) -

एक जमीनदार का बेटा अपनी परम्परागत जमीनदारी में न अटककर एक

क्रान्तिकारी बन गया । अपने व्यक्तित्व से उन्होंने लोगों के सामने देश सेवा और क्रान्ति की एक सही मिसाल रख दी है । शम्भूदा को बचपन से ही अपने समाज से नीति नियमों से बड़ी शिकायत थी । अपने क्रान्तिकारी विचारों से वे इन्हें समूल उखाड़कर फेंक देना चाहते थे । शहर आकर वे एक अच्छे कार्यकर्ता बन गये । बड़े-बड़े क्रान्तिकारियों के विचार उनके दिमाग में घुमते रहते थे --" इस अन्याय के विरोध में तुम्हें अपना जीवन होम कर देना है,तुम्हें शहीद हो जाना है । तुम्हें मिलेगा कुछ नहीं । बस नये समाज की नींव के एक पत्थर तुम होंगे ।" [३६]

शम्भूदा एक लड़की से प्यार करते है,बाद में पता चलता है कि वह लड़की जासूस है । शम्भूदा संभल जाते है । कॉमरेड रॉबीन मुकर्जी कहते हैं,शम्भूदा एक जनसेवक है,जनता के आदमी है,पार्टी के कारण ही तुम्हें जनतासे सम्मान मिलता है । जनसेवक में वस्तुपरकता,चरित्र का होना आवश्यक है । पार्टी और रोमान्स साथ-साथ नहीं चलता । तुम्हें इतना मूल्यवान जीवन मिला है, तुम इसे श्रेष्ठ बनाओं और श्रेष्ठ बनाने के लिए संयम आवश्यक होता है । शम्भूदा का विचार है कि भावना-प्रवण होना बुरी बात नहीं है लेकिन अपनी भाव-प्रवणता का ठीक-ठीक और सही उपयोग करना आवश्यक है । हमारी भाव-प्रवणता की सहृदयता की उन सर्वहारा को आवश्यकता है । हमारी संवेदना अपनी कुण्ठाओं के लिए न होकर उन लोगों के लिए होनी चाहिए जो इस आजाद देश में सिर्फ जीने-मर की सुविधा पाने के लिए लगातार संघर्षरत है ।

३:३:४:३ गलित परम्पराओं का विरोधी --

शम्भूदा ने अपना पूरा समय पार्टी के लिए दिया है । पार्टी के मार्गदर्शक मंगल जैसे नवयुवकों को प्रेरणा देकर सर्वहारा लोगों में कार्य करने की प्रेरणा देते है । विवाह बन्धन में न अटककर पार्टी का काम करने को कहते है, क्यों कि विवाह आदमी को कमजोर बना देता है । शम्भूदा की संगति के कारण कार्यकर्ता मंगल के दिमाग में बड़े-बड़े शब्द गूँजने लगते है, जैसे कि गरीबों के पक्षधर अपने जीवन,अपने भविष्य,अपनी पीढ़ी के विषय में न सोच कर समूचे समाज और

राष्ट्र और उसके भविष्य के बारे में सोचते है । समाज में फैली अनीति,गलित परम्पराओं को समूल उखाडकर फैंकना शम्मूदा का मूल उध्देश्य है । शम्मूदा ने समविचारी लोगों को एकट्ठा किया है और पार्टी का काम जोरोंपर चलाते है । कॉमरेड रॉबीन मुकर्जी का प्रभाव शम्मूदा पर है । भावना में बहनेवाले शम्मूदा को रॉबीन ही सही रास्तेपर लाते है । रॉबीन के मतानुसार अपनी भावनापर संयम रखकर,आँखे खोलकर चले तो जनता से तुम्हें प्यार मिलेगा । शोषित पीड़ित लोगों को तुम्हारी आवश्यकता है और तुम्हारे साथ लेखक,शिक्षक,डॉक्टर, समाजसेवक,नेता,अर्थशास्त्री,वैज्ञानिक आदि लोग है जो तपस्या का जीवन जी रहे है । शम्मूदा चारो ओर फैला भ्रष्टाचार,निरकुंशता,खाइयाँ,शोषण आदि को मिटाने का प्रयत्न करते है ।

शम्मूदा पर बचपन से ही अत्याचार होते हैं । सारी जमीन-जायदाद रिश्तेदारों ने दबोच ली,माई ने पुलिस से तंग आकर खुदकुशी करली । उनके अनाथ बच्चे दवा-पानी के अभाव में मर गये । लेकिन शम्मूदापर इसका कोई असर नहीं हुआ वे कहते हैं --"अपने लोगों को सुखी बनाने के लिए इतना मुआवजा तो चुकाना ही पडेगा । यह तो कुछ भी नहीं है । बड़ी चीज के लिए बड़ी कीमत चुकानी पडती है ।"[३७] शम्मूदा ने जिन्दगी में बहुत सहा है मगर उनके मतानुसार जिसने देश के लिए बलिदान किया उनको वे महत्व देते हैं । शम्मूदा विश्वासी है उनकी वाणी में एक गर्जना है, शम्मूदा की आवाज उनकी स्थापनाएँ,उनके विचार सब मिलकर व्यक्ति पर ऐसा प्रभाव छोड जाते हैं कि जिससे जल्दी ही मुक्त नहीं हुआ जा सकता । उनकी भाषा अनपढ़ लोगों की भाषा है,मजदूरों की भाषा है, फैक्टरी में काम करनेवाले तथा किसान की भाषा है ।

शम्मूदा कहते हैं भ्रष्ट व्यवस्था को मिटाना है तो व्यक्तित्व और कृतित्व में संगति लानी होगी । समाज,जीवन,विचार और दृष्टि में असमानताएँ और भिन्नताएँ है इन सबको तथा मनुष्य-मनुष्य के बीच फैली असमानताओं दूर

करने का प्रयत्न सही विचारक और प्रबुध्द व्यक्ति का कर्तव्य है। उनका मत है कि "लेखक, विचारक और राजनेता को हमेशा निर्बल का और प्रतिपक्ष का पक्षाधर होना चाहिए। वह सर्वहारा के एक विशाल समुदाय को आधार देता है, विश्वास देता है, उनमें चेतना जगाता है। उन्हें उनके अधिकारों का ज्ञान देता है - उन्हें अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए तैयार करता है... यही उसकी सही भूमिका है।" [२९] शाम्भूदा के इन विचारों को देखते हुये लगता है कि उन्होंने अपना नीजि जीवन इन परम्पराओं को तोडने में होम कर दिया है।

३:३:४:४ प्रतिबध्द कार्यकर्ता --

शाम्भूदा एक बार अत्याचार के खिलाफ खडे रहते है, तो जिन्दगी के हर मोड पर उसी विश्वास के साथ खडे है। जनता को अन्याय के विरुध्द खडा करना हो तो स्वयं अन्याय के सामने मत झुको, नीजि जीवन को सामाजिक जीवन में मत आने दो, क्यों कि सामाजिक जीवन में असंगति निर्माण होती है। और आगे यह भी कहते है कि जनता उन्हें माफ नहीं करती। शोषक व्यवस्था को मिटाना है तो व्यक्तित्व और कृतित्व में संगति लानी होगी। और शाम्भूदा ने इस लक्ष्य को सामने रखकर संगति लाने का प्रयत्न किया है। यह प्रयत्न उनमें बचपन से ही दिखाई देता है। जिन चीजों से वे नफरत करते है, उखाड फेंकना चाहते हैं। अपने लक्ष्य में पाँव फिसलते देख कॅम्रेड रॉबीन शाम्भूदा को संभल लेते है। क्यों कि पार्टी मैन सबका होता है। जो पार्टीमैन सारा समय अपनी कुण्ठाओं की तृप्ति को देता है वह चरित्रवान नहीं होता। अपनी लक्ष्यपूर्ति के लिए ईमानदारी आवश्यक है। शाम्भूदा हमेशा कहते --"अपने प्रति ईमानदार व्यक्ति ही जनता और समाज की सेवा के काबिल और उनके प्रति ईमानदार हो सकता है।" [३१]

शाम्भूदा का लक्ष्य है कि मनुष्य के बीच फैली असमानताओं को दूर करना, शोषक व्यवस्था को मिटाना आदि। यह सब करते समय सफलता की माप नहीं करना चाहिए। क्यों कि -"सफलता की माप यह नहीं है कि तुमने जिन्दगी में कितना पाया। सफलता की माप यह है कि तुमने कितना दिया।

विशेष यह नहीं है कि तुम्हारे अनुभवों का परिणाम कितना है। विशेष यह है कि तुम्हारे अनुभवों की गुणवत्ता क्या है, उनका स्तर क्या है।" ४०

३:३:४:५ मोहयुक्त और स्वप्नील --

' विवाह एक बन्धन होता है,आदमी को कमजोर कर देता है '। ' मार्क्सवाद और फ्रायडवाद साथ-साथ नहीं चलते।' ' नीजि जिन्दगी का मामला पार्टीपर असर कर जाता है।' ' और पार्टी और रोमान्स एक साथ नहीं चलते।' आदि कहनेवाले कॉमरेड शम्मूदा कहीं-कहीं स्थानपर मोहमें बहते तथा स्वप्नीली दुनिया में खोते दिखाई देते है। प्रथमत: वे कहते है कि उनके जीवन में एक मौका आया था मगर वे विवाहित थे। उसका स्पष्टीकरण नहीं देते। जब नैसर्गिक इच्छाओं को दबा रखनेपर विस्फोट होता है, तब विवाह ही सबसे आसान तरिका है। इन बातों को देख शम्मूदा मोह विहीन नहीं दिखाई देते।

शम्मूदा भावनाओं में बहते हुये दिखाई देते हैं। जैसे मिस मनोरमा केतकी चटर्जी और बाद में विजया घोषाल के साथ शम्मूदा के कम-ज्यादासंबंध दिखाई देते है। शम्मूदा ने विजया घोषाल से प्यार किया,उससे उत्साहित रहे, सपने सजाये और मनसूबे गाँठते रहे कि विजयादेवी के रूप में वे एक नयी ताकत ला रहे हैं। उन दिनों वे दिन-रात दिवा स्वप्नों में खोये रहे है। लेकिन जब पता चला कि विजया एक जासूस है तो शम्मूदा को गहरी चोट लगी। विजया घोषाल के बाहरी सौन्दर्य के कारण वे उसके दुसरे पक्ष को नहीं देख पाये। और उनका परिवार बनाने का सपना मिट्टी में मिल गया। वे कहते है --" कुछ पक्षियों के घोंसले नहीं बनते। एक बिन्दुपर आकार वे बनाना भी नहीं चाहते। वे सोचते हैं, सारा आकाश ही उनका है। सारी धरती ही उनकी है।" ४१

शम्मूदा भावना में विश्वास करते हैं। उनके मतानुसार भावना तो पत्थर में भी होती है। कोमलता,तरलता पाषाणों में भी मिलती है। पत्थरोंपर चित्रित मूर्तियाँ इसका प्रमाण देती है। भाव-प्रवण होना बुरी बात नहीं है,

वह तो आवश्यकता है उसके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं होता । आनेवाले मौके पर संयम रखना आवश्यक है । भावना, मोह में बहा हुआ व्यक्ति गलतियाँ करता है, उससे सीख भी मिलता है, जैसे --" सब लोग गलतियाँ करते है ,लेकिन उन गलतियों से सीखना और भविष्य में उन्हें न दोहराना ही बड़ी बात है ।" [४२]

३:३:४:६ निष्कर्ष --

' प्रिय शबनम ' उपन्यास का सशक्त चरित्र है शम्मूदा । शम्मूदा गलित परम्पराओं को तोडने की इच्छा रखनेवाले एक क्रान्तिकारी है । चरित्र संपन्न आदर्शवादी देशभक्त है । अपनी नीजि जिन्दगी को लोगों के सामने रखने में शम्मूदा संकोच नहीं करते । अतीत का परिक्षण करके वर्तमान में संभल जाना शम्मूदा की एक चरित्रगत विशेषता है । उसमें ही व्यक्ति का चरित्र सफल हो जाता है । शम्मूदा परिपक्व और अनुभवी व्यक्ति है । जमीनदार के बेटे होते हुये भी वे क्रान्तिकारी बनकर भूखे, प्यासे भटकते रहे है । विवाह होने के बावजूद भी उसके मोह में नहीं बँधे । एक दम पतली-सी देह और वाणी में गुरू गम्भीर गर्जना है । वे सच्चा पाटीमैन है ।

इस प्रकार हम पाते है कि शम्मूदा का व्यक्तित्व परिपूर्ण है, उनमें दृढता, ईमानदारी, सक्रियता और अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान है ।

३:३:५ मंगल की माँ --

३:३:५:१ आत्मसम्मानी --

मंगल की माँ बहुत ही आत्मसम्मानी महिला थी । मंगल, मंगल की माँ और बहन सुक्खी (सुषमा) तीनों कोटद्वार में रहते थे । मंगल के पिता ट्रक-ड्राइवर थे । मंगल की माँ और पिताजी में स्वभावान्तर होने से एक-साथ नहीं रहते थे । औरत, शराब और गालियाँ पिताजी की दुनिया थी । जो भी कमाते थे शराब में खर्च करते थे । मंगल की माँ ने पति से घर चलाने के लिए कभी पैसे नहीं माँगे । घर के बाहर चबुतरे पर पकौडियों की दुकान शुरु करके उस कमाई से

घर- खर्च तथा मंगल की पढाई की है। माँ का स्वभाव सख्त होने के कारण किसी के भी आगे उन्होंने कभी कुछ मदत नहीं माँगी। मंगल के पिताजी घर आकर माँ को पीटकर शराब के लिए पैसा छिन लेकर चले जाते थे। मंगल की माँ आर्थिक अभावों के बीच मंगल का खयाल रखती थी कि वह साफ कपडे पहनकर स्कूल जाये, किसी से कोई मदत न माँगे, खोमचेपर न बैठे और सबसे ज्यादा इसका खयाल रखती थी कि मंगल अपने पिताजी जैसा न बने, जितना भी समय मिले पढता रहे। मंगल भी कहता है कि --" मेरी माँ बहुत आत्म-सम्मानवाली औरत थी, शबनम। उसका स्वभाव भी कम सख्त नहीं था। उसने कभी पिता के सामने हाथ नहीं फैलाया। अपने लिए मेरे लिए और बहन के लिए माँ ने घर के बाहर चबुतरे पर पकौडियों की दुकान लगानी शुरु कर दी थी। मैं उसी दुकान की कमायी से पढ़ा हूँ, शबनम।" [४३] इस प्रकार मंगल की माँ में आत्मसम्मान दिखाई देता है।

३:३:५:२ धर्मप्राण नारी --

मंगल की माँ धर्मप्राण नारी है। अपनी बेटी सुक्खी बड़ी होनेपर वह उसे खोमचेपर बिठाकर भजन कीर्तन में लगी रहती है। कहीं भजन को जाती, तो कहीं महात्मा सन्यासियों की सेवा करने, प्रवचन सुनने जाती है। शीतलपाठी बिछाकर गीता का पाठ भी करती है। सुक्खी घर से भाग जाने पर माँ को सदमा पहुँचता है, इसीलिए वह तीर्थाटन के लिए चली जाती है।

मंगल जब माँ के साथ लाजो को लाकर रख देता है तब माँ और लाजो में हमेशा झगडा होता है। माँ झगडकर थक जाती तो रामायण का गुटका लेकर बैठ जाती है। जीवन के अन्तिम दिनों में भी माँ पिताजी को लेकर हरिद्वार चली जाती है। इन सभी को देखकर लगता हैकि वह धर्मप्राण नारी है। मंगल को यह सब ढ़कोसला लगता है --" कौनसी गहरी चुभन है जो अम्मा को कचोटकर रख देती है ? इतनी भक्ति, इतना कीर्तन, तीर्थ-स्थान यह सब कहीं ढ़कोसला तो नहीं है ? कहीं किसी गहरी चोट और उसके आन्तरिक दर्द को छिपाने का यह बहाना तो नहीं है ?" [४४]

३:३:५:३ सन्तान के प्रति अटूट प्यार --

वह मंगल को मंगी कहकर पुकारती है, मंगल को वह बहुत प्यार करती है, पति से कुछ सहायता न मिलनेपर भी वह पकौड़ियाँ बेचने का काम करती है और अपनी दोनों सन्तानों को पाल-पोसकर बड़ा करती है। वह चाहती है कि मंगल साफ-सुथरे कपड़े पहनकर स्कूल जाये, किसी से कोई मदन न माँगे, अपने बाप जैसा शराबी, चरित्रहीन न बने। वह लाजो को अपनी धर्मबेटी मानती है। आगे चलकर बनाहुआ लाजो और मंगल का रिश्ता उसे पसंद नहीं था। वह मंगल को लाजो से बचाना चाहती है। अपनी कहानी फिर दोहराई न जाये इसी लिए लाजो की मार-पीट करके, झगड़ा करके मंगल से अलग करना चाहती है। मंगल को पुलिस ले जाती है, तो इसका सारा दोष लाजोपर लगाकर उसकी पीठाई करती है। और पति के साथ मंगल का घर हमेशा के लिए छोड़कर चली जाती है। जाते वक्त पड़ोस के जगतबाबू के पास कह जाती है --" मुन्नी और मंगल का ध्यान रखना मंगल अभी ना समझ है। बेचारा फँस गया है।" [४५]

इस प्रकार मंगल की माँ मंगल का हमेशा खयाल रखती है। अपने बेटे की जिन्दगी साफ और सीधी बनी रहे, उसमें रुकावट न आये। अपने घर में अपनी कहानी न दोहराई जाये, इसका ध्यान रखती है।

३:३:५:४ कठोर एवं निश्चयी --

मंगल की माँ अपनी सन्तान को बहुत प्यार करती है। मगर सुक्खी लाजो के भाई के साथ भाग जाती है, तो माँ को बहुत बड़ा सदमा पहुँचता है। वह कभी-भी उनका नाम तक नहीं लेना चाहती। लाजो को उन्होंने धर्म-बेटी मान रखा था। इसीलिए मंगल तथा लाजो के सम्बन्ध को वह सह नहीं पाती और लाजो से बहु मानने से इन्कार करती है। अपनी इसी जिद पर वह अन्त तक अड़ी रहती है। किसी भी दिशा में उन दोनों को वह क्षमा नहीं करना चाहती और इतनी क्रूर हो जाती है कि लाजो की पीटाई करके घर से बाहर निकालना चाहती है। एक औरत होकर भी लाजो के पेट के बच्चे की भी वह चिन्ता नहीं करती। उसे रस्सी से पिटती है।

किसी भी हालत में लाजो जैसी गन्दगी को अपने घरमें रखने को वह तैयार नहीं है। लाजो को वह भुखा रखती है, किरोसिन की बोतल सिरपर मारती है। उन दोनों को क्षमा नहीं करती है। मंगल कहता है कि लाजो को तुमने धर्म-बेटी माना था, मैंने तो कभी अपनी बहन नहीं माना था। तो माँ कहती है --" न माँ को माँ देखे न बहन को बहन। कल को तू अपने बाप के लिए भी कहने लगेगा कि तूने इसे अपना ससम माना था, तू मान। मैं तो इसे अपना बाप नहीं मानता।" ४६

माँ की कठोरता हमें उसकी जवानी में ही दिखाई देती है। वह अपने पूर्व पति को छोड मंगल के बाप के पास रहती है। मंगल के बाप की पहली औरत को जहर देकर मारती है। इस प्रकार अपना इच्छित प्राप्त करने के लिए वह क्रूर बनती दिखाई देती है।

३:३:५:५: निष्कर्ष --

इस प्रकार मंगल की माँ एक ओर धर्मप्राण, स्वाभिमानी और अपनी सन्तान के प्रति अटूट प्यार रखनेवाली माँ है, तो दूसरी ओर अपनी जिद को बनाए रखने के लिए क्रूरतम और गलत को किसी भी दिशा में क्षमा न करनेवाली तथा निश्चयी भी है। उसका आक्रोश भी उतना ही तीव्र है, जितना उसका पुत्र-स्नेह।

३:३:६ गौण पात्र --

'प्रिय शबनम।' उपन्यास के प्रमुख पात्र-मंगल और शबनम तथा अन्य महत्वपूर्ण पात्र-लाजो, शम्मूदा और मंगल की माँ को छोडकर गौण पात्रों के अन्तर्गत निम्नलिखित पात्र आते है।

३:३:६:१ - मंगल के पिता --

मंगल के पिता एक ट्रक-ड्राइवर थे। वह हमेशा घर से बाहर रहते थे। औरत, शराब और गालियाँ उनकी दुनिया थी। जब भी घर आते मंगल की माँ को मार-पीटकर, गाली-गलोच देकर शराब के लिए पैसे लेकर जाते थे। उन्होंने कभी मंगल तथा मंगल की बहन को पिता का स्नेह नहीं दिया। पत्नी को कभी पति

सुख नहीं दिया । पत्नी के अलावा दूसरी एक औरत को रखा था । सुक्खी के भाग जाने का दोष भी मंगल की माँ पतिपर लगाती है । अपने पिताजी का स्वभाव बताता हुआ मंगल कहता है --" अपने बाप के रूप में एक ऐसे आदमी को जानता था, जिसके हाथ में हमेशा एक लोहे की छड़ रहती है । जिसकी आँखें नशे से चढ़ी हुई और सूजी रहती है । जिसके कोनो से पान की पीक बहती रहती है और मुँह में सतत गालियाँ ।"[४७] वृध्दावस्था में फिर पिताजी कोटद्वार आकर रहते । पास - पडोसवालों की दयापर जीवन जिने लगते हैं । नौकरी चली गयी है और बिमारी ने घेर लिया है । मंगल की माँ उन्हें बम्बई लाती है । पछतावा के कारण मंगल के सामने वे बच्चे की तरह रोते है । वे न चाहते हुये भी मंगल की माँ पिताजी को लेकर हरिद्वार लेकर चली जाती है ।

३:३:६:२ शबनम के पिता --

शबनम के पिता नगर के एक बड़े एडवोकेट थे । अपने दिनों वे आई.एन. ए.के कप्तान रह चुके है । एक विवेकशील व्यक्ति जिसने सुभाषबाबू को सहयोग दिया था । शबनम की माँ जल्दी ही चल बसी थी मगर पिताजी दूसरी शादी न करके उन्होंने अपनी बच्ची को पाल-पोसकर पढाकर संस्कारशील बनाया है । पत्नी मरने के बाद उन्होंने अपनी दुनिया सीमित कर ली थी । किताबें,स्टडी,कोर्ट और घर आदि की ओर ज्यादा ध्यान दिया । अपनी बेटी को गिफ्ट के रूप में वे किताबें और पैन के अलावा कुछ नहीं देते है । शबनम से वे कहते है -" अगर इतना पढ़ाने के बाद भी तुम अपना अच्छा-बुरा नहीं समझ सकती,तो फिर तुम्हारी इतनी पढ़ाई का लाभ ही क्या हुआ ?" [४८]

शबनम के पिता पिता के साथ-साथ शबनम के अच्छे दोस्त भी है । वे मंगल तथा उसकी स्टडी से प्रभावित है । इस प्रकार शबनम के पिता एक प्रसिध्द एडवोकेट,एक अच्छे पिता,व्यवस्थाप्रिय और विवेकशील व्यक्ति है ।

३:३:६:३ मूलचन्द --

लाजो के पति मूलचंद का उल्लेख उपन्यास में शुरु और अन्त में आता है। वह अपनी माँ के बहकावे में आकर लाजो को मारपीट करके पीहर जानेपर मजबूर करता है। और अन्त में लाजो को अपनाता है। उसे यह मालूम होते हुये भी कि लाजो मंगल के साथ दस बरस रह चुकी है, मंगल से एक बच्ची भी है। बच्ची आस्था से लाजो और वह मंगल को क्लेकमिल करते है। आस्था को वह होटल का बिल मानता है। तब मंगल सोचता है --"मेरे सामने बैठा व्यक्ति कितना घुन्ना है, कितना घटा हुआ। कितनी ठंडी और नपीतुली क्रूरता इसमें है।"[४९] वह मंगल से कहता है कि हम जैसे लोगों के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा नहीं लगता। अब लाजो आस्था की मौसी तथा माँ की गाँववाली है।

३:३:६:४ बच्चन --

मंगल के पडोस का एक लडका बच्चन जो वसई में रहता है, फैक्टरी में चौकीदारी करता है। मंगल की वह दो बार सहायता करता है। उसकी आत्मियता के बारे में मंगल कहता है --"हम जिन लोगों को बहुत हीन, अपने में कहीं गया - गुजरा और छोटा मानकर चलते है, वे अनेक अवसरों पर इस बात का प्रमाण दे जाते है कि वे हमसे-हम-सफेदपोशों और पढ़े-लिखे लोगों से कहीं अधिक मानवीय, संवेदनशील और करूणापूर्ण होते है।"[५०]

३:३:६:५ आस्था --

मंगल के पराजित दिनों की उपलब्धि है आस्था। मंगल उसे बहुत सहेजकर रखना चाहता है। मंगल प्रथमत: अपनी माँ को सुख न मिलने के कारण माँ को लेकर नया जीवन नयी आस्था के साथ जीने की कोशिश करता है। फिर शबनम के साथ पारिवारिक जीवन जीने की आस्था उसके मन में पलती है। फिर एक बार लाजो, माँ, पिताजी सभी के साथ नये सिरे से जिना चाहता है। अन्त में माँ-पिताजी घर छोड जाते हैं तो लाजो को लेकर बचीखुची जिन्दगी जिना चाहता

है । परन्तु लाजो अपने मूल पति के पास चली जाने पर मंगल आस्था को लेकर एक नयी जिन्दगी की शुरुवात करता है । इस प्रकार 'प्रिय शबनम ।' के लेखक देवेश ठाकुर ने मंगल की बच्ची का नाम आस्था रखकर मध्यवर्ग में पले मंगल का हमेशा आस्थावान होना दिखाई दिया है ।

३:३:६:६ लाजो की माँ --

लाजो की माँ विधवा थी । उसका बेटा मंगल की बहन को लेकर भाग जाता है । इसीलिए लाजो और उसको किसी का आधार नहीं है । मंगल उसकी सहायता करने का वादा करता है । लाजो की माँ भी मंगल को कहती है --" मंगल, तू इसका धर्म-भाई है । हमारा भी कभी-कभी खयाल रखना । यह निगोडी तो सब छोडकर आ गयी । अब मैं विधवा, इन दोनों का पेट कैसे कहाँ से भरूँ । " ५१

३:३:६:७ कॅप्टन अमर घई --

शबनम के पति अमर घई स्क्वाड्रन लीडर है । शबनम को एक बच्चे की सौगात देकर बांगला मुक्ति संग्राम से लापता है । शबनम चार बरस से उनकी प्रतीक्षा कर रही है ।

३:३:६:८ सुषमा --

मंगल की बहन सुक्की उर्फ सुषमा माँ के व्यवहार से तंग आकर लाजो के भाई के साथ भाग जाती है । और मुजफ्फर जाकर आर्य समाजी पध्दति से शादी कर लेती है । वह मंगल को लिखती है --" भागना मेरे लिए मजबूरी बन गयी थी, भैया । खोमचा लगने से पहले ही हमारे चबूतरे पर ग्राहक चक्कर लगाने लगते थे ... वे माँ की कचरी-पकोडियों के लिए नहीं, मेरे लिए आते थे ... माँ, पता नहीं क्यों आँखें मूँदे रहती थी इस सबसे .. मुझसे यह सब सहा नहीं गया और जब मुझे पडोस की लाजो के भाई से थोडी शह मिली, तो मैं उसके साथ यहाँ मुजफ्फरनगर चली आयी । " ५२

३:४: चरित्र-चित्रण की सफलता --

'प्रिय शबनम।' उपन्यास में लेखक देवेश ठाकुर ने व्यक्तित्व की प्रधान रेखाएँ अंकित की है। मध्यवर्ग में पला-बढ़ा इस उपन्यास का नायक मँगल संघर्ष करके ऊपर उठनेवाले अपने जन्मजात संस्कारों से मुक्ति का प्रयास कर अभिजात्य संस्कारों को पाने की चेष्टा करता है। विषम परिस्थिति में मँगल संघर्ष करते हुये अपने भविष्य के निर्णय स्वयं लेता है। इस प्रकार 'प्रिय शबनम।' मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की कथा है जिसमें लेखक अपने नायक तथा प्रमुख पुरूष पात्र मंगल के चरित्र-चित्रण में सफल हुये है। उन्होंने नायक को खुद का विकास स्वयं करनेपर छोड दिया है। लेखक ने नायक को लगनशील,अध्यापक,एक प्रतिबध्द कार्यकर्ता, मानसिकता,मानसिक द्वन्द्व ,संवेदनशील तथा संघर्ष में घर्षण की स्थिति में अपने नाम के अनुरूप अन्त तक मंगल भाव रखने आदि का सफल चित्रण किया है।

'प्रिय शबनम।' उपन्यास की नायिका तथा प्रमुख स्त्री पात्र शबनम को लेखक ने उच्चमध्यवर्ग परिवार में चित्रित किया है। लेखक ने शबनम और मँगल के माध्यम से कहा है कि बड़े या उच्च तबके के लोग बुरे नहीं होते और छोटे या निचले तबके के लोग नित्य अच्छे नहीं होते। शबनम को एक आदर्श प्रेमिका, आदर्श पुत्री,आदर्श पतिव्रता और आदर्श माता के रूप में चित्रित करने लेखक सफल हुये हैं। लेखक ने उसको 'प्रिय शबनम' कहा है वह सौ प्रतिशत सच है। क्यों कि वह लेखक की ही प्रिय नहीं तो अपने स्वभाव के कारण पाठक की भी प्रिय बन जाती है। इस प्रकार 'प्रिय शबनम।' उपन्यास की नायिका सचमुच ही प्रिय है।

लेखक लाजो को लालसी,स्वार्थपरता और उच्छृंखलता के प्रतीक के रूप में चित्रित करने में सफल हुये है। मंगल की माँ को ममतामयी के साथ क्रूर एवं पाशविकता को छूनेवाली के रूप में चित्रित किया है। शम्मूदा में क्रांतिकारी, दृढता ,ईमानदार,अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान आदि रूप में चित्रित करने में लेखक को सफलता मिली है। मंगल और शम्मूदा के रूप में लेखक ने मार्क्सवादी

विचारकों की दो धाराएँ चित्रित की है। शम्मूदा एक आदर्श पात्र है। मध्यवर्ग के निम्न पात्रों के अन्तर्गत लाजो, मूलचंद, मंगल के पिता आदि का चित्रण उसी परिवेश में किया है और बच्चन निम्न मध्यवर्ग का पात्र होते हुये भी मानवीयता का प्रतीक है। इस प्रकार लेखक देवेश ठाकुर 'प्रिय शबनम।' उपन्यास के चरित्रांकन में सफल हुये है।

३:५ निष्कर्ष --

'प्रिय शबनम।' उपन्यास ढाई पात्रों का है। मंगल और शबनम पूर्ण एक-एक पात्र और लाजो को आधा पात्र माना जा सकता है। लाजो न मुख्य पात्र है और न गौण पात्र। उपन्यास का नायक मंगल निम्नमध्यवर्ग का है। वह संवेदनशील, अत्यन्त कुशाग्र बुध्दिमत्ता होते हुये भी उसके मन में हीनता की भावना बसी है। प्रेमी के रूप में उसमें समर्पन भावना है। अपनी असहाय सहेली लाजो को आधार देने के लिए अपने जीवन में आनेवाली हरियाली (शबनम) ठुकराता है। माँ को सुखी देखने का उसका एक स्वप्न है। अपने पिताजी से वह तिरस्कृत रहा है फिर भी उनके बुढ़ापे में उन्हें आधारहीन नहीं छोडना चाहता। लाजो तथा उसकी माँ की जिम्मेदारी अपनेपर लेता है। वह पार्टी का प्रतिबध्द कार्यकर्ता होते हुये भी नीजि जीवन में भावनाओं में बहता हुआ मिलता है। अन्त में अपनी बेटी आस्था को लेकर नयी आस्था के साथ जिन्दगी जिना चाहता है।

उपन्यास के पुरुष पात्रों में मंगल के अलावा शम्मूदा, शबनम, और मंगल के पिता, लाजो का पति, मंगल का गांव का बच्चन आदि है। शम्मूदा अपने नीजि जीवन को ठुकराकर समाज के लिए समर्पित होनेवाले सच्चे देशभक्त तथा क्रांतिकारी है। देश सेवा के लिए उन्होंने अपना पारिवारीक जीवन होम कर दिया है। पिछडे, सर्वहारा लोगों के लिए, उनकी समस्याओं के लिए शम्मूदा के छटपटाहट दिखाई देती है। शम्मूदा पूर्णत: समर्पित चरित्र है जिसकी समाज में परिवर्तन लाने के लिए आवश्यकता है।

शबनम के पिता एक सच्चे स्वतंत्रता सेनानी तथा नगर के प्रसिध्द एडवोकेट थे। एक व्यवस्था प्रिय, सभ्य पिता और विवेकशील व्यक्ति थे। अपने से ज्यादा दूसरों का भला चाहनेवाले संस्कारशील पिता है।

मंगल के पिता मध्यवर्ग का गिरा हुआ पात्र है जिसने कभी परिवार की चिन्ता न करके खुद की अय्याशी की ओर ध्यानदिया । लाजो का पति एक घिनौना पात्र है। मंगल का मित्र बच्चन गरीब होते हुये भी उसमें दूसरों की मदत करने की भावना है। शबनम के पति एक देशरक्षक के प्रतीक है।

' प्रिय शबनम।' में नारी पात्रों में शबनम, लाजो, मंगल की माँ, बहन, लाजो की माँ आदि है। शबनम उच्चवर्ग में पली-बढ़ी होनेपर भी संस्कारों के कारण उसमें मध्यवर्ग के प्रति करूणा दिखाई देती है। वह विवेकशील व्यक्ति को अपने से ऊँचा मानती है चाहे वह गरीब भी क्यों न हो। वह एक सच्ची पतिव्रता तथा सच्ची प्रेमिका है। लाजो मध्यवर्ग का गलित पात्र है जिसमें उच्छृंखलता ज्यादा है। दूसरों के जीवन में बवंडर निर्माण करती है। मंगल की माँ ममतामयी तथा क्रूरतम भी है। उसकी कठोरता में अपनी संतान की भलाई की कामना है। लाजो की माँ विधवा और असहाय है। मंगल की बहन सुषमा परिवार में असुरक्षितता देख अपना निर्णय खुद लेती है और भाग कर शादी करती है। वह नई पीढ़ी की प्रतिनिधित्व करती है। जो बड़ो की हर आज्ञा का पालन न करके अपना हित सोचते है।

इस प्रकार ' प्रिय शबनम।' उपन्यास के प्रमुख, महत्वपूर्ण तथा गौण पात्र अपनी-अपनी जगह सही चित्रित हुये है और गुण-दोषों से युक्त दिखाई देते है। इनके यथार्थ चित्रण में उपन्यासकार सफल बन गये हैं।

सन्दर्भ

१	देवेश ठाकुर	' प्रिय शबनम । '	पृ.३९ ।
२	वही	वही	पृ.६७-६८।
३	वही	वही	पृ.७२।
४	वही	वही	पृ.४६।
५	वही	वही	पृ.५८।
६	वही	वही	पृ.६३।
७	वही	वही	पृ.७१।
८	वही	वही	पृ.३१।
९	वही	वही	पृ.३५।
१०	वही	वही	पृ.३८।
११	वही	वही	पृ.५७।
१२	वही	वही	पृ.१८।
१३	वही	वही	पृ.१९-२०।
१४	वही	वही	पृ.५०।
१५	वही	वही	पृ.१८।
१६	वही	वही	पृ.१४।
१७	वही	वही	पृ.३२।
१८	वही	वही	पृ.५२।
१९	वही	वही	पृ.५४।
२०	वही	वही	पृ.८३।
२१	वही	वही	पृ.२४।
२२	वही	वही	पृ.८२।
२३	वही	वही	पृ.३४।
२४	वही	वही	पृ.८३।

२५ देवेश ठाकुर ' प्रिय शबनम । ' पृ.८४।

२६ वही वही पृ.३२।

२७ वही वही पृ.१७।

२८ वही वही पृ.२२।

२९ वही वही पृ.३९ ।

३० सम्पा.डॉ.नंदलाल यादव: देवेश ठाकुर : व्यक्ति,समीक्षक और कथाकार : पृ.२१५।
(डॉ.शंकर पुणतांबेकर:प्रिय शबनम,मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी की एक अनूठी गाथा)

३१ देवेश ठाकुर ' प्रिय शबनम ' पृ.८४।

३२ वही वही पृ.४२ ।

३३ वही वही पृ.६१।

३४ वही वही पृ.७२।

३५ वही वही पृ.७०।

३६ वही वही पृ.४५।

३७ वही वही पृ.६५।

३८ वही वही पृ.८२ ।

३९ वही वही पृ.६५।

४० वही वही पृ.८२।

४१ वही वही पृ.४७।

४२ वही वही पृ.८२।

४३ वही वही पृ.९।

४४ वही वही पृ.५८।

४५ वही वही पृ.६९।

४६ वही वही पृ.५२।

४७ वही वही पृ.५९।

४८ वही वही पृ.२२।

४९	देवेश ठाकुर	'प्रिय शबनम'	पृ.७८।
५०	वही	वही	पृ.३४।
५१	वही	वही	पृ.१३।
५२	वही	वही	पृ.१० ।